RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

05
दूंढना खत्म, परमात्मा इस सृष्टि पर आ चुके हैं: शिवानी

13
मुख्यमंत्री ने नए राजयोग सेवाकेंद्र का किया शुभारंभ

वर्ष ▸ 08 | अंक ▸ 04 | हिन्दी (मासिक) | अप्रैल ▸ 2021 | पृष्ठ ▸ 16 | मूल्य ▸ ₹ 9.50

महान आत्मा का महाप्रयाण ▸ आंखों से ओझल होकर भी यादों में बसीं रहेंगी राजयोगिनी दादी गुलजार

व्यक्त का महाप्रयाण अव्यक्त वतन 'गुलजार'

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 93 वर्षीय राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी का देवलोकगमन

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, राज्यपाल ने शोक संवेदना व्यक्त कर श्रद्धांजली अर्पित की

11 मार्च को सुबह 10.30 बजे मुंबई के सैफी हॉस्पिटल में ली थी अंतिम सांस

राजयोगिनी दादी जानकी के देवलोकगमन के बाद एक वर्ष पूर्व ही बनीं थीं मुख्य प्रशासिका

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड (राजस्थान)। पचास साल तक परमात्मा का संदेशवाहक बनकर लाखों लोगों के जीवन को 'गुलजार' करने वाली राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनीजी का महाप्रयाण हो गया। 11 मार्च महाशिवरात्रि को सुबह 10.30 बजे मुंबई के सैफी हॉस्पिटल में दादी ने अंतिम सांस ली। एयर एंबुलेंस से उनके पार्थिक शरीर को संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन लाया गया। जहां 13 मार्च को सुबह 10 बजे अंतिम संस्कार किया गया। हजारों लोगों ने शामिल होकर दादीजी को अंतिम विदाई दी। मुखाग्नि अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव बीके निर्वैर और दादीजी की निज सचिव बीके नीलू बहन ने दी। बता दें कि एक साल पूर्व ही मार्च 2020 में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुखिया राजयोगिनी दादी जानकी के महाप्रयाण के बाद राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी मुख्य प्रशासिका बनीं थीं। दादी हृदयमोहिनी को सभी प्यार से गुलजार दादी भी कहते थे। दादीजी की जीवन यात्रा पर एक नजर...

140 देशों में योग-साधना से दी श्रद्धांजली

दादीजी के देवलोकगमन के बाद से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के देश-विदेश में स्थित सेवाकेंद्रों पर अखंड योग-साधना का दौर जारी है। सभी योग के माध्यम से दादीजी को अपने शुभ बाइप्रेशन और श्रद्धांजली अर्पित कर रहे हैं।

12 लाख भाई-बहन और 46 हजार बहनों की थीं आदर्श...

ब्रह्माकुमारीज़ से देश-विदेश में जुड़े 12 लाख भाई-बहनों और 46 हजार समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों की दादी आदर्श थीं। उनके द्वारा उच्चारित एक-एक शब्द लाखों लोगों के जीवन को बदलने और आगे बढ़ाने के लिए वरदानी बोल होते थे। अस्वस्थ होने के बाद भी दादीजी अंतिम समय तक लोगों के लिए प्रेरित करती रहीं और विश्वव्यापी सेवाओं में जुटी रहीं।

> ब्रह्माकुमारीज़ की प्रमुख दादी हृदयमोहिनी जी ने सामाजिक उत्थान के लिए जीवन पर्यंत कार्य किया। आध्यात्मिकता के लिए किए गए उनके कार्यों को सदा याद रखा जाएगा। मेरी ओर से विनम्र श्रद्धांजली। ओम शांति।
>
> ● **रामनाथ कोविंद,** राष्ट्रपति

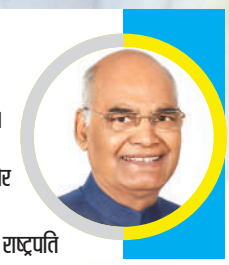

> राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को मानव पीड़ा कम करने और सामाजिक सशक्तिकरण के उनके कई प्रयासों के लिए याद किया जाएगा। उन्होंने विश्व स्तर पर ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सकारात्मक संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके निधन से दुःखी हूं।
>
> ● **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

वर्ष 1928 में कराची में हुआ था जन्म

दादी हृदयमोहिनी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में कराची में हुआ था। आप जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहां आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा (संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार से प्रभावित होकर अपना जीवन उनके समान बनाने की निश्चय किया। आपकी लौकिक मां भक्ति भाव से परिपूर्ण थीं।

मात्र चौथी कक्षा तक की थी पढ़ाई

दादी हृदयमोहिनी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होने से आप जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहां तक कि आपको कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार हुए, जिनका जिक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया। दादी हृदयमोहिनी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। बचपन में जहां अन्य बच्चे स्कूल में शरारतें करते और खेल-कूद में दिलचस्पी के साथ भाग लेते थे, वहीं आप गहन चिंतन की मुद्रा में हमेशा रहतीं।

▸ शेष पेज 2 पर

96 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी बनीं स्प्रीचुअल हेड

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी (96) को ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का स्प्रीचुअल हेड बनाया गया है। संस्थान की मैनेजमेंट कमेटी में यह निर्णय लिया गया। इससे पूर्व राजयोगिनी दादी रतनमोहनी के पास संस्थान की अतिरिक्त मुय प्रशासिका का दायित्व था। मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य और सूचना निदेशक बीके करुणा ने बताया किया दादी रतनमोहिनी जी को अंतरराष्ट्रीय स्प्रीचुअल आर्गनाइजेशन का स्प्रीचुअल हेड और राजयोगिनी ईशु दादी एडिशनल स्प्रीचुअल चीफ की भूमिका निभाएंगी।

1925 में हैदराबाद में हुआ था जन्म

दादी रतनमोहिनी का जन्म 25 मार्च 1925 को हैदराबाद सिंध में हुआ। वे 11 वर्ष की उम्र में ब्रह्माकुमारीज़ के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के संपर्क में आईं। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 96 वर्ष की उम्र में भी दादी आज पूरी तरह से सेवाओं में सक्रिय हैं। उनकी दिनचर्या प्रातः 3.30 बजे से ब्रह्ममुहूर्त से शुरू होती है और रात्रि दस बजे तक ईश्वरीय सेवाओं की गतिविधियां चलती रहती हैं। इसके अलावा दादीजी संस्थान में आने वाली बहनों के प्रशिक्षण और उनकी नियुक्ति का भी कार्यभार देखती हैं। दादी रतनमोहिनी संस्थान के स्थापना काल की सदस्यों में से एक हैं। देश-विदेश में भी ईश्वरीय सेवाएं करती रही हैं।

आध्यात्म का सितारा ▶ दादी हृदयमोहिनी ने कई देशों में भी जाकर दिया आध्यात्म का संदेश

देश-विदेश से लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए

यादों के झरोखे से दादी हृदयमोहिनी की जीवन यात्रा...

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को राखी बांधते हुए मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, साथ में हैं गुजरात जोन की निदेशिका बीके सरला बहन और संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बृजमोहन भाई।

एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, साथ में हैं दादी जानकी, तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के प्लेटिनम जुबली राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी दादी जानकी और अतिरिक्त महासचिव बृजमोहन भाई।

तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से स्नेह भेंट के बाद ईश्वरीय उपहार टोली प्रधान करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी।

मुंबई में एक कार्यक्रम के बाद महानायक अमिताभ बच्चन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी और बीके योगिनी बहन।

"ब्रह्माकुमारीज़ की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के निधन का समाचार जानकर दुःखी हूं। उन्हें सब स्नेह से दादी गुलजार के नाम से भी जानते थे। आपने अपना संपूर्ण जीवन समाजसेवा, लोगों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और राजयोग की शिक्षा देने में समर्पित कर दिया।"

● **एम. वेंकैया नायडू,** उपराष्ट्रपति

"राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के निधन के बारे में जानकर दर्द हुआ। समाज और मानवता के कल्याण के प्रति उनकी भक्ति और संकल्प हमें मार्गदर्शन करते रहेंगे। बेहतर दुनिया बनाने के उनके अग्रणी प्रयासों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। मैं संवेदना व्यक्त करता हूं।"

● **अमित शाह, गृहमंत्री,** भारत सरकार

"प्रमुख दादी हृदय मोहिनी जी के देहावसान का समाचार दुखद है। वे संवेदना, स्नेह, सरलता और करुणा की मिसाल थीं, जिन्हें मानव सेवा के कार्यों के लिए सदैव याद किया जाएगा। शोक की इस घड़ी में मेरी संवदनाएं ब्रह्माकुमारीज़ परिवार एवं उनके अनुयायियों के साथ हैं।"

● **ओम बिरला,** लोकसभा स्पीकर

"ब्रह्माकुमारीज़ की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के निधन पर मेरी हार्दिक संवेदना। उन्होंने अपना जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित किया और लोगों को आध्यात्मिक पथ की ओर प्रेरित किया। विचार उनके अनुयायियों के साथ हैं, भगवान उन्हें शक्ति दें।"

● **अशोक गहलोत,** मुख्यमंत्री, राजस्थान

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी) जी के निधन के समाचार से दुःख पहुंचा है। विनम्र श्रद्धांजलि!"

● **शिवराज सिंह चौहान,** मुख्यमंत्री, मप्र

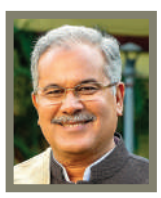

"दुःखद समाचार मिला कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि की प्रमुख दादी हृदयमोहिनी जी (जिन्हें सब गुलजार दादी कहते थे) ने शरीर का त्याग कर दिया। महाशिवरात्रि के दिन ही वह कैलाशवाहिनी हो गईं। उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम एंव विनम्र श्रद्धांजली। ओम शांति"

● **भूपेश बघेल,** मुख्यमंत्री, छग

"राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. दादी हृदयमोहिनीजी के निधन पर दुख व्यक्त करता हूं। ब्रह्माकुमारीज़ की वैश्विक प्रमुख, जिन्हें प्यार से दादी गुलदार के रूप में जाना जाता है। उनका 93 वर्ष की आयु में सैफी अस्पताल मुंबई में निधन हो गया।"

● **बण्डारू दत्तात्रेय,** राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश

"ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनीजी का पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा। उन्होंने दूसरों के जीवन में सकारात्मक अंतर लाने का प्रयास किया। आध्यात्म और महिला सशक्तिकरण में उनका योगदान उल्लेखनीय है। इस दुःख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके अनुयायियों के साथ हैं।"

● **जगत प्रकाश नड्डा,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

"राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनीजी को मेरी श्रद्धांजलि। उन्हें आध्यात्मिक जागृति को प्रेरित करने में उनकी भूमिका के लिए याद किया जाएगा। उनकी शिक्षाएं दुनियाभर में ब्रह्माकुमारीज़ का मार्गदर्शन करती रहेंगी। ओम शांति.."

● **राहुल गांधी,** पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रमुख राजयोगिनी हृदयमोहिनी का निधन भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की अपूरणीय क्षति है। ईश्वर उनकी पवित्र आत्मा के लिए सद्गति प्रदान करें एवं उनके अनुयायियों को दुख की इस घड़ी में धैर्य प्रदान करें।"

● **दुष्यंत कुमार गौतम,** राष्ट्रीय महासचिव भाजपा

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के देवलोकगमन का समाचार अत्यंत दुखद है। उन्होंने संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक जागृति एवं योग साधना के प्रचार-प्रसार में लगाया। ईश्वर से दिवंगत पुण्यात्मा की चिर शांति की कामना है।

● **संजय कुमार झा,** वॉटर रिसोर्स, रिवर डवलपमेंट मंत्री, बिहार सरकार

"ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी के निधन का दुःखद समाचार मिला। महाशिवरात्रि के दिन ही वह कैलाशवाहिनी हो गईं। उन्होंने जीवन पर्यंत मानवता की सेवा को ईश्वर का कार्य माना। उनके सभी अनुयायियों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। ओम शांति"

● **अर्जुन मुंडा,** सांसद व राष्ट्रीय महासचिव भाजपा

▶ पेज एक का शेष...

9 वर्ष की उम्र में ही होने लगी थी दिव्य अनुभूति

जब आप मात्र 9 वर्ष की थीं तब से आपको दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। इसके बाद से वह जीवन की अंतिम यात्रा तक ज्यादातर समय ध्यान मग्न ही रहती थीं। दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानीं साफ बयां करता था।

1969 में ब्रह्मा बाबा के निधन के बाद बनीं परमात्म दूत

18 जनवरी 1969 में संस्था के संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी हृदयमोहिनी ने परमात्मा संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में हर वर्ष आने वाले लाखों भाई-बहनें के लिए परमात्मा का दिव्य संदेश देकर योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया था कि जब में मन की शक्ति से वतन में जाती हूं तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता है। उस दौरान मेरे द्वारा जो वचन उच्चारित होते हैं वह भी मुझे याद नहीं रहते हैं।

दादीजी को बाबा से हुए थे साक्षात्कार

एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गईं थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहां बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना ख्याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक मां-बाप की याद नहीं आई।

14 साल तक हैदराबाद में रहकर की कठिन साधना

दादी हृदयमोहिनी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग साधना में वह लगी रहती थीं। इसके साथ ही बाबा एक-एक सप्ताह का मौन कराते थे। तभ से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो उतना ही बात करती थीं। अंत समय तक वह मौन में रहीं।

नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने प्रदान की डिग्री

दादी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपाड़ा ने डी. लिट (डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया है। दादी को यह उपाधि उड़ीसा में प्रभु के संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार करने और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर प्रदान की गई।

दादी जानकी के निधन के बाद बनीं थीं मुख्य प्रशासिका

पिछले साल 23 मार्च 2020 में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन के बाद आपको संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी आपको दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुंबई से ही संस्थान की गतिविधियों का सारा समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं।

सुबह 3 बजे से शुरू हो जाती थी दिनचर्या

ब्रह्माकुमारी नीलू बहन ने बताया कि दादीजी हमेशा तीन बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाती थीं। इसके साथ ही उनकी दिनचर्या की शुरुआत साधना के साथ होती थी। यहां तक कि चलते-फिरते, खाते-पीते ईश्वर के ध्यान में मग्न रहतीं।

डॉक्टर बोले- दादी के चेहरे पर कभी दर्द की फीलिंग नहीं देखी

मुंबई से आए सैफी हॉस्पिटल में दादीजी का इलाज करने वाले डॉक्टर्स डॉ. दीपेश अग्रवाल, डॉ. प्रसन्ना, डॉ. आकाश शुक्ला, डॉ. निपुन गंगवाला, डॉ. मनोज चावला, डॉ. जिगर देसाई ने अपने-अपने अनुभव बताते हुए कहा कि हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि दादीजी जैसी दिव्य और महान आत्मा का इलाज करने का मौका मिला। हमारे जीवन का यह पहला अनुभव रहा है कि किसी मरीज के इलाज के दौरान दिव्य अनुभूति हुई। जैसे ही दादीजी के रूम में जाते थे तो मन को शक्तिशाली फीलिंग होती थी। बीमारी के बाद भी दादीजी के चेहरे पर कभी दर्द, दुख या उदासी की फीलिंग नहीं देखी। दादीजी के साथ के अनुभव को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। उन दिव्य अनुभूतियों को सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है।

नई यात्रा पर दादी मां दादी हृदयमोहिनी ने कई देशों में भी जाकर दिया आध्यात्म का संदेश

कैसी भी विषम परिस्थितियां हों दादीजी के चेहरे पर शिकन नहीं आती: बीके शिवानी

■ शिव आमंत्रण । नांदेड़ (महाराष्ट्र) । दादी हृदयमोहिनी कोई भी परिस्थिति आए हमेशा स्थिर रहीं। बात का समाधान भी करतीं और कैसी भी

विषम परिस्थितियां हों उनके चेहरे पर शिकन नहीं आती। क्योंकि उन्हें बचपन से ही निश्चय है कि जो हो रहा है, वो कल्याणकारी है और इसमें ही परमात्मा मदद करेगा। इसी वजह से वे स्थिर रहतीं।

वे हमेशा यही सोचती कि परमात्मा करवा रहा है, मैं कुछ नहीं कर रही हूं। वे भले ही सभी के आगे थीं लेकिन अपनी पहचान छिपा परमात्मा को ही आगे रखा। जो हो रहा है, परमात्मा हमारे साथ है । उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे बहुत कम बोलती थीं । मतलब उनके शब्दों में काफी शक्ति थी। एक लाइन या फिर तीन से चार शब्दों में बहुत गहरी बात बोल देतीं थीं। मैं कभी उनके साथ नहीं रही, लेकिन हमेशा उनसे मिलती रहती थी। पिछले तीन साल से वे मुंबई में थीं। मैं जब भी वहां गई, उनसे मिली। किसी को भी उन्हें किसी के मन की बात बताने की जरूरत नहीं पड़ी। वे अपने आप एक शब्द बोलतीं और हमें जवाब मिल जाता था। पिछले तीन साल से वे मुंबई में थीं। शरीर में काफी कुछ था, लेकिन वहां के डॉक्टर हमेशा यह कहते थे कि पहला मरीज देखा, जिसने कभी नहीं बताया कि मुझे यहां दर्द होता है या तकलीफ। डॉक्टर कहते कि दादी बताती नहीं हैं उन्हें क्या तकलीफ है, तो इलाज में भी परेशानी होती है। लेकिन दादी कहती मुझे न कोई दर्द है और न ही तकलीफ। क्योंकि उनकी सहनशक्ति काफी थी। उनकी आत्मा इतनी शक्तिशाली थी कि शरीर में तकलीफ होने के बाद भी आत्मा सुखी रहती। यही कारण था कि तकलीफ का अनुभव ही नहीं होता था। जब आत्मा स्थिर होती है, तो चेहरे की मुस्कुराहट ही अलग होती है और हमने तो हमेशा उन्हें उसी स्थिति में देखा है। **(जैसा कि अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी ने बताया)**

रुहानी एकता और प्यार... ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदय मोहिनी और वर्तमान स्प्रीचुअल चीफ दादी रतनमोहिनी में आपस में गहरा प्यार, स्नेह और समन्वय था।

महाशिवरात्रि के दिन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि की दादी हृदयमोहिनी जी ने देहत्याग किया। इस खबर से मैं मर्माहत हूं। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। 50 साल से अधिक समय तक उन्होंने विश्वभर में संगठन का संदेश फैलाने का काम किया। ओम् शांति...

● **रजत शर्मा,** डायरेक्टर व वरिष्ठ पत्रकार, इंडिया टीवी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि की मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी शरीर का त्याग कर ब्रह्मलीन हो गईं। वे 9 वर्ष की आयु में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी थीं। परम श्रद्धेय दादीजी को कोटि-कोटि नमन....

● **धर्मलाल कौशिक,** नेता प्रतिपक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा

ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की प्रमुख राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का निधन भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर उनकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करें एवं उनके अनुयायियों को दुख की इस घड़ी में धैर्य प्रदान करें।

● **दीप्ति किरण माहेश्वरी,** पूर्व कैबिनेट मंत्री, राजस्थान

दुनियाभर में आध्यात्मिक जागृति के प्रति लोगों को प्रेरित करने वाली राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के निधन पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनकी शिक्षाएं दुनियाभर के करोड़ों लोगों का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

● **संयम लोढ़ा,** विधायक, सिरोही, राजस्थान

स्नेह मिलन... राजस्थान की पूर्व सीएम वसुंधरा राजे सिंधिया से मुलाकात के दौरान ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी व वर्तमान स्प्रीचुअल चीफ दादी रतनमोहिनी।

छोटों से स्नेह... व्यस्तताओं के बावजूद दादी छोटे भाई-बहनों के बीच कुछ पल बिताती थीं ताकि उनमें उमंग-उत्साह बना रहे।

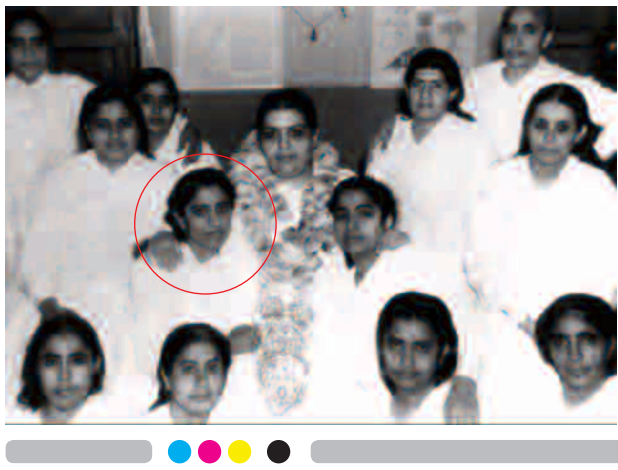

मम्मा की चहेती... दादी गुलजार (लाल घेरे में) अपने धीर-गंभीर स्वभाव और गुण विशेषताओं के कारण संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) विशेष जिम्मेदारी देती थीं।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को मेरी श्रद्धांजलि। आध्यात्मिक जागृति को प्रेरित करने में उनकी भूमिका के लिए हमेशा याद किया जाएगा और उनकी शिक्षाएं दुनियाभर में ब्रह्माकुमारियों का मार्गदर्शन करती रहेंगी, उनकी महान आत्मा को शाश्वत शांति मिले।

● **अभिजीत मुखर्जी,** पूर्व जीएम सेल

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को आध्यात्मिक जागृति के लिए समृद्ध योगदान और ज्ञान का स्रोत होने के लिए याद किया जाएगा। उनका जीवन पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

● **गौतम सेठ,** राष्ट्रीय प्रवक्ता, यूथ कांग्रेस, पंजाब

शुरू से ही दादी हृदयमोहिनी के साथ सखी की तरह रही। हम सभी का आपस में गहरा स्नेह, प्यार था। दादी पूरे ईश्वरीय परिवार की स्नेही और आदर्शमूर्त थीं। दादी की शिक्षाएं सभी का मार्गदर्शन करती रहेंगी। दादी का बचपन से ही शांत और गंभीर स्वभाव था। उनकी बुद्धि की लाइन इतनी क्लीयर थी कि कुछ ही सेकंड में वह ध्यानमग्न हो जाती थीं। उनका जीवन दिव्यता, पवित्रता और योग-साधना के प्रति अद्भुत लगन का मिसाल था।

● **दादी रतनमोहिनी,** स्प्रीचुअल चीफ, ब्रह्माकुमारीज़

दादी हृदयमोहिनी इस ईश्वरीय यज्ञ की फाउंडर मेंबर में से एक थीं। उनका पूरा जीवन एक आदर्श व्यक्तित्व और कृत्तिव की मिसाल रहा। दादी को कभी ये भान ही नहीं रहता था कि मैं इतनी बड़ी जिम्मेदारी संभाल रही हूं। वह सदा खुद को निमित्त समझकर करनकरावनहार करा रहा है के भाव से कार्य करती थीं। दादी के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने ईश्वरीय ज्ञान का जो खजाना दिया है वह सदा सभी का मार्गदर्शन करता रहेगा।

● **ईशू दादी,** अतिरिक्त स्प्रीचुअल चीफ, ब्रह्माकुमारीज़

हम सभी को परमात्मा पिता से मंगल मिलन कराने वालीं, परमात्म की संदेशवाहक दादी व्यक्त रूप से जरूर हमारे बीच नहीं रहीं लेकिन उनके द्वारा दी गईं अव्यक्त शिक्षाएं सदा भाई-बहनों का मागर्दशन करतीं रहेंगीं। दादी से हम सभी को एक मां, पालक और बहन के स्नेह की पालना मिली। ये दादी की महानता है कि जीवन के अंतिम क्षणों तक ईश्वरीय सेवा में जुटी रहीं। व्यक्त से महाप्रयाण कर अब दादी फरिश्ते रूप में पूरे विश्व की सेवा करती रहेंगी।

● **बीके निर्वैर ,** महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

दादीजी का प्यार, स्नेह, दुलार और वात्सल्य बचपन से ही मिला। दादीजी का एक-एक कर्म आदर्श कर्म होता था। उनके साथ रहने पर ऐसी अनुभूति होती थी कि जैसे कोई दिव्य फरिश्ता के साथ हैं। उन्होंने योग-तपस्या से खुद को इतना शक्तिशाली बना लिया था कि उनके संपर्क में आने वाले हर एक भाई-बहन को अनुभूति होती थी।

● **बीके जयंती ,** यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका

ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रमुख दादी गुलजार जी के निधन का दुखद समाचार मिला। परमपिता परमेश्वर उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

● **विवेक नारायण शेजवलकर,** सांसद, ग्वालियर, मप्र

दुनियाभर में आध्यात्मिक जागृति के प्रति लोगों को प्रेरित करने वाली राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनकी शिक्षाएं दुनियाभर के करोड़ों लोगों का मार्गदर्शन करती रहेंगी। ईश्वर पुण्य आत्मा को शांति प्रदान करें।

● **नीरज दांगी,** राज्यसभा सदस्य, राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज के प्रमुख दादी हृदय मोहिनी जी के निधन से दुखी हो गए। उन्होंने समाज में शांति और खुशी लाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। ओम शांति।

● **डॉ. प्रमोद सावंत,** विधायक, गोवा

पूरे ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के प्रति मेरी संवेदना है। राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी के निधन के बारे में सुनकर दुख हुआ।

● **प्रणिता सुभाष,** फिल्म अभिनेत्री

अव्यक्त शिक्षा

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

आत्माभिमानी स्थिति में स्थित होकर कर्म करें

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ॥ काम शुरू करते समय सोचो और फिर बीच-बीच में चेक करो। नहीं तो पहले बहुत अच्छी अवस्था में शुरू करते फिर भूल जाते। जैसे भोजन करते समय एक गिट्टी तो बाबा को खिला दी फिर बातों में लग गए। फिर मैं खाती हूं या बाबा खाता है, वह भूल जाता है। ऐसे कोई भी काम शुरू करते हैं तो उस समय बहुत अच्छा होता है। फिर काम कान्सेस हो जाते हैं। कोई बुरी तरफ भी नहीं जाते लेकिन जो काम कर रहे हैं उसी तरफ बुद्धि लगी रहती है। बाबा कहते हैं तुम्हें कर्म कान्सेस नहीं बनना है, सोल कान्सेस होकर कर्म कराओ। कर्मेन्द्रियों द्वारा मैं कर्म करा रही हूं - यह स्मृति रहे। यह नहीं कि कर्म में ही फंस गए। उसी का ही सोच चल रहा है और ऐसे कर्म कन्सेस में मैं हूं और उसी समय शरीर छूट जाए तो हमारी गति क्या होगी? इसलिए दो-दो घंटे में चेक करो। अगर बीच-बीच में चैक नहीं करेंगे तो रात में जब चार्ट देखेंगे तो कहेंगे जितना होना चाहिए उतना नहीं हुआ। फिर पश्चाताप होगा, जो करना था वह नहीं किया और टाइम बीत गया। वह टाइम तो फिर हमारे हाथ में आना ही नहीं है। वह तो फिर पांच हजार वर्ष के बाद आएगा। बाबा भी कहते हैं कि बातों में अक्ल है लेकिन मेरे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे उन्हों में इतना भी अक्ल नहीं है। तो बातों में, परिस्थितियों में इतना अक्ल है जो वह पांच हजार वर्ष के बाद ही आएगी। और हम क्या करते हैं? उसी बात को पकड़कर बैठते हैं। यह हुआ था ना...यह है ना...एक वर्ष पहले भी कुछ किसी से हुआ होगा तो वह हमारे सामने आएगा। कहेंगे देखा, यह है ही ऐसा, इसने पहले भी किया था, यह करता ही रहता है। तो हम तो बात को छोड़ते ही नहीं और बात बिचारी चली गई तो बाबा इस पर मिसाल सुनाते कि सांप तो चला गया और लकीर पीटते रहते। अब लकीर को पीटने से क्या मिलेगा? तो हमारे पास एक साल तक किसी बात का इम्प्रेशन रहा तो वह परेशान करता रहेगा। इसलिए बात पूरी हुई, अभी क्या करना है वह सोचो। बाकि बीती को ही सोचते रहेंगे तो उससे फायदा क्या? टाइम, एनर्जी, संकल्प इतने खजाने हमारे वेस्ट हुए न। इससे क्यों नहीं हम भविष्य का सोचें तो उससे फायदा हो। इसलिए बाबा कहते हैं अभी रियलाइज करो, थोड़ा अंतर्मुख होकर अपने अंदर देखो और परिवर्तन की शक्ति लाओ। अगर मेरे में परिवर्तन की शक्ति नहीं है, तो कितना भी मैं चार्ट लिखूं, चेक करुं लेकिन होगा तो फिर वही। परिवर्तन करने की शक्ति अभी बहुत जरूरी है। दूसरे को भी परिवर्तन करने के लिए हमारी पावरफुल वृत्ति चाहिए। जैसे कोई भी हमारी जड़ मूर्ति के सामने जाते हैं तो वहां से भी वह शांति के वायब्रेशन ले आते हैं ना! जड़ मूर्ति कुछ बोलती तो नहीं है, कुछ हाथ से भी नहीं देती। लेकिन जड़ मूर्ति में इतनी पॉवर है। देखो वैष्णव देवी के पास जाते हैं वही चित्र कैलेन्डर्स में भी हैं और ही कैलेंडर में स्पष्ट होती है, मंदिर में तो लाइन में खड़े होकर थोड़ा सा दर्शन कर लेंगे। अब उस मूर्ति से क्या मिलता है? वायब्रेशन ही तो मिलता है ना। शान्ति, मिलती है, शक्ति मिलती है, तभी जाते हैं। तो जब लास्ट समय तक हमारे जड़ चित्रों में इतनी पॉवर है तो क्या चैतन्य में पॉवर नहीं है? चैतन्य का ही तो जड़ बना है और वह हम ही तो हैं। तो अगर यह लक्ष्य रखें कि हमको सेल्फ रियलाइज करके अपने अंदर जाकर अपनी कमियों को पहले परिवर्तन करना है तो हमारे परिवर्तन के वायुमंडल से और भी धीरे-धीरे बदल जाएंगे।

...और आबू में शुरू हुई ब्रह्मा वत्सों की तपस्या

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ॥ ब्रह्माकुमारी दीदी मनमोहिनी जी कहती थीं कि जब मैं बृजकोठी से तैयार होकर बाबा, मम्मा तथा यज्ञ-वत्सों का ओखा बंदरगाह पर स्वागत करने के लिए रवाना होने लगी थी, तब मैंने बृज कोठी में ऊपर के एक कमरे में बहुत लंबा और मोटा सांप देखा। इससे मेरे मन में संकल्प उठा कि शायद मैंने यज्ञ-वत्सों के लिए गलत स्थान चुना है। जब मैं ओखा बंदरगाह पर बाबा से मिली तो मैंने उनके कानों में धीमे-धीमे स्वर में कहा-''बाबा। हम ने जो स्थान लिया है वहां तो सांप है।'' मैंने बाबा को यह बता देना अपना कर्त्तव्य समझा था। मेरी यह बात सुनकर बाबा ने मुस्कुरा दिया। वे बोले-''बच्ची, कोई हर्ज़ा नहीं है। सांप हमारा क्या बिगाड़ेंगे। हमें तो सांपों से मुकाबला करना है।'' यहां सांपों से बाबा का अभिप्राय काम, क्रोधादि विकारों से तथा आसुरी स्वभाव के लोगों से था। बाबा के इन शब्दों को सुनकर मेरे मन को संतोष हुआ। मैंने अपने-आपसे कहा कि ''चलो, बाबा ने स्वयं ही अब इस स्थान को पसंद किया है।'' मेरा ध्यान इस बात की ओर भी गया कि बाबा हमारी अवस्था को बिल्कुल स्थिर और अभय बनाते हैं।

जब सभी यज्ञ-वत्स आबू पर्वत पर पहुंचे तब उनके मन में भी यह विचार चला कि पता नहीं आबू को'यज्ञ' के लिए क्यों चुना गया है? परन्तु समयान्तर में शिव बाबा ने ज्ञान-मुरलियों में समझाया कि कैसे 5000

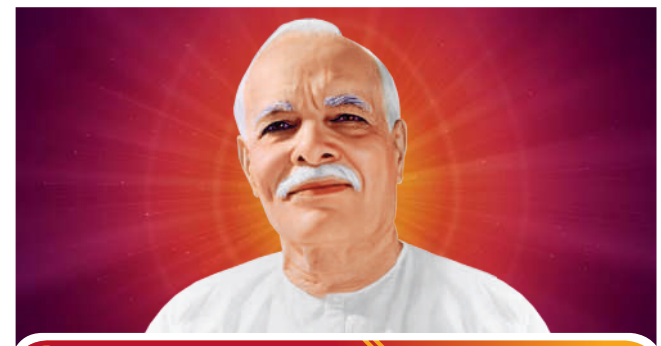

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

जब सभी यज्ञ-वत्स समूह में बृज कोठी से निकलकर डैम लेक, नक्की लेक आदि की ओर जाते तो स्थानीय लोग स्तब्ध हुए से उन्हें अपलक देखते रहते कि यह शक्ति दल कहां से आ गया है।

वर्ष पहले भी यहां ही आदि-देव ब्रह्मा और आदि-देवी सरस्वती ने अपने वत्सों सहित तपस्या की थी, जिसकी यादगार के रूप में यहां विश्व के अति सुन्दर दिलवाड़ा (देलवाड़ा) मन्दिर, अम्बा जी का मंदिर, अधर देवी का मंदिर, कुंवारी कन्या का मंदिर तथा अचलगढ़ का मंदिर बना हुआ है और यहां एक इतिहास-प्रसिद्ध 'यज्ञ-कुंड' भी है। जिसके बारे में दन्त-कथा है कि इस यज्ञ से सूर्यवंशी राजकुल के पूर्वज निकले थे। तब सभी यज्ञ-वत्सों को यह जान और देखकर खुशी हुई कि एक ओर दिलवाड़ा में हमारी कल्प पहले वाली पार्थिव यादगारें हैं और दूसरी ओर हम अपने दैवी माता-पिता के साथ अथवा आदि देव और आदि देवी के साथ इसी पर्वत पर 5000 वर्ष पहले की तरह वही ज्ञान-यज्ञ कर रहे हैं और सूर्य-वंशी महाराजा बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। तभी तो कवि की लेखनी ने निम्नलिखित पद अंकित किये-

आँख खोल देखें दिलवाड़ा,
खोलें मन का बंद किवाड़ा,
मंदिर के देवों की प्रतिमा,
ब्रह्मा-वत्सों की ही प्रतिमा।
मंदिर की प्रतिमाओं का जीवंत रूप
मधुबन में देखा, आदि पिता जगदम्बा
के संग इन्हें तपस्या में रत देखा।
अग्निकुंड का गुह्य राज है,
जान चुका ब्राह्मण समाज है।
शिव ने जिसको रचा आज है,
रूद्र यज्ञ पर हमें नाज है।
संगम का शुभ वर्ण ब्राह्मण,
इसी यज्ञ में अर्पण होकर,
स्वाहा करके निज तन-मन-धन,
अश्वमेध को करता पूरण।
जीवन की इन आहुतियों से,
मां सरस्वती ब्रह्मा-ब्राह्मण।
सतयुग में जाकर बनते हैं,
ये श्रीलक्ष्मी, श्री नारायण।

आबू में यज्ञ-वत्सों का पधारना और पर्वतों पर तपस्या करना अब सिन्ध से स्थानान्तरित होकर सभी यज्ञ-वत्स आबू में बृज कोठी में आकर रहने लगे थे। वे ईश्वरीय विद्या-अध्ययन तथा प्रभु-स्मृति में लवलीन रहते थे। प्रतिदिन प्रातःउन्हें ईश्वरीय ज्ञान की मधुर मुरली-सुनाकर अतीन्द्रिय सुख देने वाला बाबा उन्हें प्रायः सैर करने तथा पर्वतों पर चढ़ने भी अपने साथ ले जाते थे। जब सभी यज्ञ-वत्स निक्कर और रबड़ के बूट पहने हुए समूह में बृज कोठी से निकलकर डैम लेक, नक्की लेक आदि की ओर जाते तो स्थानीय लोग निस्तब्ध हुए-से उन्हें अपलक देखते रहते कि यह शक्ति दल कहां से आ गया है। उनके मन में प्रश्न उठता था कि हम कोई स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं? उन्होंने कभी भी इतनी संख्या में कन्याओं-माताओं को इस स्फूर्ति से, इस वेग में दौड़ते-चलते, पर्वत पर चढ़ते नहीं देखा था। .... **क्रमशः**

मैं और मेरापन से रहें मुक्त

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ॥ हमको जो ड्यूटी दी है तुम मेरे होकर रहो, मैं तेरा हूं। यह हम लोगों की लाइफ है। ऐसे सब अनुभव करें बाबा ने हमको अपना बनाया, मैं तेरा हूं, तू मेरी हो। उसी जीवन से हमारी रक्षा है। फिर शिक्षाएं पालन करना आसान लगता है। बाबा मेरा, मैं बाबा की तो बाबा की शिक्षाओं के अनुकूल चलना अच्छा और सहज लगता है। वह जैसे जीवन में अंदर से बल मिलता है। शिक्षाओं पर चलने से हमारी रक्षा होती आ रही है। बुद्धिवानों का बुद्धि औरों से काम कराता है। हमारी बुद्धि को अपने साथ जोड़ करके निश्चित बना देता है। निष्कामी बना देता है, जो जिसने जमा किया उसका वर्णन मत करो। न हम किसका वर्णन करें, वह जाने खुदा जाने। सम्बन्ध में, लेनदेन में भी बाबा जानें हम बीच में ख्यानात न डालें। कोई बाबा के बच्चे बनते हैं उसके बीच में हम न आएं। भले बाबा से डायरेक्ट सम्बन्ध जोड़ के बाबा से सुख पायें, बाबा से वर्सा लेवें। बाबा ने यह जो इशारा दिया

हमको बाबा ने इतना दिया है, वह सबको मिले। हमारा श्वांस, संकल्प समय, सब सफल हो।

है अभी वारिस कम बनते हैं, कारण हम हैं। बाप के साथ अपने आपको मिला देते हैं। कोई कुछ बाप को देता है तो कहते मैंने दिया, मेरा हक लगता है। यह संस्कार हमारे में न हों तो उनके भी नहीं होंगे। यही गुप्त सेवा है। किसको भी मैं और मेरेपन से छुड़ाना, उनसे मुक्त करना - यह हम सबका काम है।

जो आदि वाले हैं उनमें बाप के संग का रंग लगा हुआ है। मैं मेरे-पन से फ्री हैं। जितना हम श्रीमत पर चलते हैं, अपनी मनमत मिक्स नहीं है। मेरा ही कहना मानो, नहीं तुमको जो बाबा के लिये प्रेरणा हो, अपने आप तुम बाबा को याद करो। जो निमित्त बनते हैं अगर उनमें मैं पन या मेरापन है तो वह दूसरों को दुःख देते हैं। हम इससे मुक्त रहें। दूसरों को भी इन बातों से मुक्त करें तो सदा के लिए जैसे हम सुखी हैं। ऐसे जिनके हम निमित्त हैं वह भी बाबा के बच्चे हैं। कभी किसी प्रकार का भी दुःख महसूस न करें। वह भी बाबा से सुख पाएं, बाबा से लेन-देन करें। हमारे से कोई लेन-देन न करें। हमको कुछ भी नहीं चाहिए। हमको बाबा ने इतना दिया है, वह सबको मिले। हमारा श्वांस, संकल्प समय, सब सफल हो। उसमें भी खास हमारे पास ज्ञान, गुण, शक्तियों का जो धन है, वह भी सफल करें और सफलतामूर्त रहें।

बाबा की सकाश लेनी है तो सब लगावों से मुक्त बनो...

हमारी जीवन बाबा के हवाले है तो वहीं हमारा रखवाला है। न सिर्फ पालना दे करके पढ़ाने वाला है, हर कदम पर अपनी सकाश दे चलाने वाला भी है। तो बाबा की सकाश क्या होती है, उसका पहले अनुभव करें फिर औरों को सकाश का अनुभव कराएं। बाबा कहता है औरों को सकाश देने की सेवा करो। तो मेरा अनुभव कहता है, सकाश माना करेन्ट। जैसे जिस घड़ी हम बाबा से मिलते हैं तो एक करेन्ट मिल जाती है, उसमें अशरीरीपन का अनुभव हो जाता है। दूसरी सकाश मिलती है, जिसमें सुख-शांति-प्रेम-आनंद-शक्ति एक सेकंड में जैसे पहुंच जाती है। बाबा से मिलते ही ऐसी करेन्ट मिलती जो अशरीरी हो जाते फिर सकाश काम करती है तो अन्दर से यहीं आवाज निकलता है कि बाबा की बहुत मदद है। पहले कहते थे- करन करावनहार बाबा करा रहा है, हम निमित्त हैं। लेकिन अभी प्रेजेन्ट समय त्याग, तपस्या और सच्ची दिल से सेवाएं करते उनके रिटर्न में बाबा बहुत सकाश देता है। जो सकाश लेने के लायक हो उनसे वह सकाश काम कराती है। बाबा जो कार्य कराने के निमित्त बनाता है उसमें कला भी भर देता है, शक्ति भी भर देता है। बाबा की सकाश तब मिलती है, जब हमारी दिल सच्ची है। त्याग सच्चा हो, उसमें जरा भी मेरापन न हो, क्योंकि बाबा को मेरापन अच्छा नहीं लगता। अगर मैं और मेरा है तो सकाश नहीं मिल सकती है। .... **क्रमश**

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

अब ढूंढना खत्म, परमात्मा इस सृष्टि पर आ चुके हैं...

कहीं न कहीं हमें ये बताया गया था कि परमात्मा है, अब परमात्मा की खोज ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। शांति, प्रेम, सच्चा प्यार, सुख ये सब हम खोज रहे थे।

सबसे बड़ी खोज कि मैं कौन हूं। इसके बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है, फिर भी हमारी खोज जारी है।

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । अभी भी दुनिया की कई ऐसी बातें हैं, जिन्हें हम नहीं जानते हैं। अगर देखें तो परमात्मा के भी कई ऐसे रहस्य हैं, जिनके बारे में हम जागरूक नहीं हैं। जबकि ईश्वर के नाम में ही सबकुछ स्पष्ट है। एक है परमात्मा को जानना और फिर परमात्मा ने जो-जो बताया उसको जानना। अब दोनों बातें धीरे-धीरे हमारे सामने प्रत्यक्ष होनी हैं, क्योंकि यह समय की पुकार है।

हम जानते हैं कि हर चीज समय के अनुसार होती है। जब वो चीज समय पर मिलती है तो जीवन एक अलग मोड़ ले लेता है। चाहे वो राजनीतिक सत्ता हो, या धर्म की शक्ति हो, या विज्ञान की, धन की शक्ति हो। हम सभी शक्तियों को और फिर अपनी दुनिया की हालत को भी देख रहे हैं। सब कुछ करते हुए, सारे प्रयास, विश्व स्तर पर सारी कॉन्फ्रेंस करते हुए भी हम इस दुनिया को थाम नहीं पा रहे हैं। दुनिया को क्या, हम तो अपना जीवन ही नहीं थाम पा रहे। आज हर कोई खोज रहा है। कहीं न कहीं हमें ये बताया गया था कि परमात्मा है, अब परमात्मा की खोज ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। शांति, प्रेम, सच्चा प्यार, सुख ये सब हम खोज रहे थे। इन सबसे बड़ी खोज कि मैं कौन हूं। इसके बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है, फिर भी हमारी खोज जारी है। सबने यही समझा कि जीवन का लक्ष्य ही है ढूंढते रहना। अपने आप से पूछना कि क्या हम हमेशा ढूंढ़ते ही रहेंगे। कितने जन्मों से उसे ढूंढ़ते आ रहे हैं। क्या जीवन सिर्फ खोजने के लिए मिला है और फिर खोजते-खोजते ही इस दुनिया से चले जाना है।

पेशेवर जीवन का हम आनंद लेना चाहते हैं, लेकिन उसमें आज तनाव, अवसाद आदि सामान्य शब्द बन चुके हैं। लेकिन हमने उनको स्वीकार कर लिया.....

....उन्हीं के साथ अपना जीवन चलाते गए। हम सबकुछ कर रहे हैं। लेकिन जिस तरह से या जिस गुणवत्ता से वो होना चाहिए, उसकी कमी है। कर रहे हैं, लेकिन उसका जो आनंद है, जो उसमें मुधरता चाहिए, सहजता चाहिए, वो नहीं है।

ये जो हमारी खोज है, अपने आपको, परमात्मा को और जीवन से जुड़े ढेरों प्रश्नों को जानने की, उसकी खोज अब समाप्त हो चुकी है। क्योंकि जिसको हम कई जन्मों से ढूंढ रहे थे, वो इस सृष्टि पर आ चुका है। जब वो खुद आ चुका है तो फिर ढूंढने की जरूरत नहीं है। अब तो एक शुरुआत है। अब तक हम परमात्मा को ढूंढ रहे थे। जैसे एक बच्चा पिता को ढूंढ रहा था। तो वह कब तक ढूंढता रहेगा। अपने आपको देखें कि जैसे एक बच्चा, जो अपने आपको ही भूल चुका है। पहली बात कि हम अपने आपको ही भूल चुके हैं और अपने माता-पिता से बिछड़ चुके हैं। अपने घर से बिछड़ चुके हैं। हम कौन हैं, हम किसके बच्चे हैं और हम कहां के रहने वाले हैं। इन तीनों का जवाब हमें नहीं मालूम। तो आप सोचिए कि एक बच्चा जो मेले में बिछड़ गया है, कोई उससे पूछे कि आप कौन हो, कहां के रहने वाले हो, किसके बच्चे हो, तो उसे मालूम नहीं है। अगर वो हमें पहुंचाना भी चाहे तो पहुंचा नहीं पाएंगे। सबसे जरूरी है कि हम सभी भटक रहे थे। अब सोचिए उस बच्चे को ये तीन जवाब मिल जाएं और जिसको वो ढूंढ रहा था वो उसको मिल जाए, तो अब क्या फर्क होगा।

एक है ढूंढना ढूंढ़ना और एक है मिलने के बाद का जीवन। अब वो समय आ चुका है। ढूंढने का काम खत्म। अब हम उससे मिलें। मिलने के बाद एक बहुत सुंदर प्यारा-सा रिश्ता बनाएं। फिर वो जीवन कैसा होगा। यह हमारा जीवन है, लेकिन उस जीवन में हम उतनी खुशी, सुख, आराम अनुभव नहीं कर रहें तो फिर हमारा जीवन संघर्ष में ही बीतता है और हम जीवन का आनंद नहीं उठा पाते हैं। चेहरों पर मेहनत दिखाई देती है, इसलिए बहुत कुछ करना पड़ता है खुश रहने के लिए। वो खुशी हमारी निरंतर नहीं है।

आज हम अपने जीवन को देखें तो जीवन की गुणवत्ता क्या है? हमारी निजी गुणवत्ता क्या है, मेरे पेशेवर जीवन की गुणवत्ता क्या है। मेरे पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता क्या है। मेरे संबंधों में मधुरता कहां है। कुछ पल रुककर हमें यह सोचना पड़ेगा कि अगर हम जीवन में कुछ बदलना चाहें, तो क्या बदल सकते हैं। तो हमारे पास बहुत कुछ आएगा बदलने के लिए। रिश्तों में कहीं दूरियां आ रही हैं, वापस मझे सहज बनना है। छोटी-छोटी बातों में, गलतफहमी के कारण हम दूर हो रहे हैं। पेशेवर जीवन का हम आनंद लेना चाहते हैं, लेकिन उसमें आज तनाव, अवसाद आदि सामान्य शब्द बन चुके हैं। लेकिन हमने उनको स्वीकार कर लिया। उन्हीं के साथ अपना जीवन चलाते गए। हम सबकुछ कर रहे हैं। लेकिन जिस तरह से या जिस गुणवत्ता से वो होना चाहिए, उसकी कमी है। कर रहे हैं, लेकिन उसका जो आनंद है, जो उसमें मुधरता चाहिए, सहजता चाहिए, वो नहीं है।

अलविदा डायबिटीज

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

व्यायाम (EXERCISE) और डायबिटीज

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । विज्ञान के अनेकानेक साधनों और उपकरणों को दैनिक जीवन में उपयोग करते-करते आज हम सभी सुस्त हो चुके हैं। फलतः डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, हृदयाघात आदि बीमारियां कितनी बढ़ गई हैं। आज से 5 दशक पहले लोग कितने कर्मठ थे। अपने हाथों से ही सब कुछ करते थे। दूर-दूर तक भी भारी सामान उठाकर चल पड़ते थे इसलिए बीमारियां भी कम थी। इसलिए आज हम सभी को पुनः कर्मठ बनने की आवश्यकता है।

नियमित व्यायाम, कसरत करना तथा कर्मठ जीवन के बिना निरोगी रहना असंभव है। हमारा शरीर एक गाड़ी की तरह है जिस गाड़ी को ठीक रखने के लिए राइट फ्यूल डालने के साथ-साथ नियमित उसे चलाने की भी आवश्यकता है। इसी तरह शरीर को भी नियमित रूप से संचालन करना जरूरी है। जब कोई लंबा समय तक बैठा ही रहता है और चलना फिरना ना के बराबर होता है जिसकी वजह से हम देख रहे हैं कितनी सारी बीमारियां वैसे ही पैदा हो रही है इसलिए वर्तमान में हम सभी को नियमित रूप से व्यायाम, कसरत करना बहुत जरूरी है। जब कोई व्यायाम करता है तो उसके मांस पेशियों को अधिक मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है और इस ऊर्जा का संचार रक्त में प्रवाहित ग्लूकोज शुगर से ही होती है। इसलिए व्यायाम करने से रक्त में शुगर की मात्रा कम हो जाती है जो मधुमेह ग्रसित व्यक्ति के लिए बहुत ही लाभकारी है। साथ में नियमित व्यायाम करने से शरीर की चर्बी फैट भी कम होने लगती है जो डायबिटीज के लिए बहुत जरूरी है। शरीर में अधिक चर्बी जमा होने से इंसुलिन का प्रतिरोध ज्यादा हो जाती है। फिर रक्त में शुगर की मात्रा भी बढ़ने लगती है परंतु नियमित व्यायाम करने से शरीर की चर्बी की मात्रा घटने के साथ मांसपेशियां बढ़ने लगती है और रक्त में शुगर की मात्रा को भी नियंत्रित रखता है।

नियमित व्यायाम से फायदा

- शारीरिक वजन (Body weight) संतुलित रहता है।
- शरीर के अंदर अधिक मात्रा में चर्बी जमा नहीं होती है।
- मांसपेशियां मजबूत होने के कारण शक्तिशाली बन जाते हैं।
- कार्य करने की क्षमता अधिक होती है (Stamina) बढ़ जाती है।
- शरीर का अकड़न (Stiffness)रक्तम होकर (Flexbility) लचीलापन बढ़ाती है।
- शारीरिक संतुलन (Balance) कायम रहता है, गिरने से बच जाते हैं।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) बढ़ती है।
- शीघ्र सांस नहीं फूलती, फेफड़े फूल जाते हैं।
- हजम करने की शक्ति तथा भूख बढ़ती है।
- नींद ठीक से आने लगती है, अनिंद्रा से छुटकारा मिलती है।
- रक्त संचालन ठीक से होने के कारण चर्मरोग नहीं होते हैं।
- डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, हृदयघात और Dyslipidemia आदि अनेकानेक बीमारियों से सुरक्षित रहते हैं।
- ब्रेन में अनेक हार्मोन क्षरण होने लगते हैं, जिससे मन सदा प्रफुल्ल रहता है।
- Qulity of Life अच्छी हो जाती है, दूसरों के सामने आदर्श उदाहरणमूर्त बन जाते हैं।
- दीर्घायु बन जाते हैं, इस तरह पूरा जीवन ही सुखमय बन जाता है।

संपर्क: बीके जगतजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

राजयोग मेडिटेशन, मूल्य शिक्षा को जीवन में अपनाकर आज हजारों युवाओं के जीवन को नई दिशा मिली है...

बीके किरण
इंजीनियरिंग स्टूडेंट
हजारीबाग, झारखंड

राजयोग के अभ्यास से जीवन बना आसान

हजारीबाग (झारखंड) । परमात्मा मिलने से पहले मेरा जीवन पूरा अंधेरों से भरा था। मुझे हरपल चिंता-डर रहता था। मेरा भविष्य क्या होगा? हमेशा पढ़ाई व परिवार को लेकर चिंता रहती थी। जो आजकल युवा वर्ग में सामान्यतः देखने को मिलती है। मेरा मन हर वक्त परेशान व अशांत रहता था। फिर मैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ी। जहां राजयोग सिखाया जाता है। राजयोग द्वारा हम स्वयं को परमात्मा से जोड़कर सर्वशक्तियों से भरपूर करते हैं। मैंने स्वयं राजयोग द्वारा अनुभव किया है और मेरा जीवन सच्ची शांति, सुख और प्रेम से भरपूर हो गया है। ऐसा महसूस होता है कि भगवान सदा मेरे साथ हैं। इसके लिए मैं परमात्मा का धन्यवाद करती हूं। अतः मेरी राय है एक बार राजयोग सबको जरूर सीखना चाहिए।

बीके मधु
बीना, मप्र

बचपन से संकल्प था कुछ अलग करना है

बीना/सागर (मप्र) । बचपन में बड़ी दीदी के साथ ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाती थी, लेकिन ज्ञान समझ नहीं आता था। सेवाकेंद्र पर जाना जारी रहा और पढ़ाई भी चलती रही। जैसे-जैसे बड़ी हुई तो यह ज्ञान स्पष्ट होने लगा। बीए करने के बाद संकल्प किया कि अब पूरी तरह से परमात्मा शिव बाबा की सेवा में जीवन लगाना है। वर्ष 2018 से बीना सेवाकेंद्र पर रहकर सेवा कर रही हूं। पहले मुझे बहुत डर लगता था, हमेशा चिंता रहती थी, सबसे बड़ी बात सिर में बहुत दर्द रहता था जो कि राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से दूर हो गया। राजयोग की शक्ति का कमाल है कि अब मन बहुत शांत रहता है। डर, भय, चिंता तो जैसे जीवन से सदा के लिए अलविदा हो गया है। युवाओं को राजयोग से जुड़ना चाहिए।

संपादकीय

ईश्वरीय मिलन की नयी शुरूआत

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का व्यक्त भाव से जाना मतलब साफ है कि पिछले 85 वर्षों से चला आ रहा साकार माध्यम द्वारा आत्मा-परमात्मा के मिलन के युग का अंत हो गया। लेकिन ईश्वरीय संविधान में बदलाव के कई मायने होते हैं। जो ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े लोगों को समझने की जरूरत है। इस संगमयुग में घटती अप्रत्याशित घटनाएं और आत्मा-परमात्मा मिलन के साकार युग का अंत होना भी इस बात का इशारा करता है कि अब युग बदलाव का समय समीप है। हमें अपनी संपूर्णता और स्थिति को और मजबूत करने की जरूरत है। अब वक्त आ गया है आध्यात्मिक उड़ान का। जितनी हम आंतरिक उड़ान को प्राथमिकता देंगे उतना ही हमारा समय और श्वांस सार्थक होगा। यह समय अलबेलेपन का नहीं बल्कि उठने, जागने और उड़ने का है। दादी भले ही व्यक्त भाव से महाप्रयाण कर गई हैं, लेकिन अव्यक्त वतन गुलजार हो गया। परमाता की अमानत थी और परमाता के पास चली गयी। लेकिन समस्त मानव जाति के लिए एक ईश्वरीय संदेश छोड़ गई।

यह समय उठने, और उड़ने का है।

बोध कथा | जीवन की सीख

मैंने सबकुछ पा लिया

महान लेखक टालस्टाय की एक कहानी है -शर्त। इस कहानी में दो मित्रों की आपस में शर्त लगती है यदि उसने एक माह एकांत में बिना किसी से मिले, बातचीत किए एक कमरे में बिता देता है तो उसे 10 लाख नकद देगा। इस बीच यदि वो शर्त पूरी नहीं करता तो वो हार जाएगा। पहला मित्र ये शर्त स्वीकार कर लेता है। उसे दूर एक खाली मकान में बंद करके रख दिया जाता है। बस थोड़ा-सा भोजन और कुछ किताबें उसे दी गई। उसने जब वहां अकेले रहना शुरू किया तो 1 दिन, 2 दिन किताबों से मन बहल गया फिर वो खीझने लगा। उसे बताया गया था कि थोड़ा भी बर्दाश्त से बाहर हो तो वो घंटी बजा के संकेत दे सकता है और उसे वहां से निकाल लिया जाएगा। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे उसे एक-एक घंटे युगों से लगने लगे। वो चीखता-चिल्लाता लेकिन शर्त का ख्याल कर बाहर किसी को नहीं बुलाता। वह अपने बाल नोचता, रोता, गालियां देता, तड़प जाता, मतलब अकेलेपन की पीड़ा उसे भयानक लगने लगी। परंतु वो शर्त की याद कर अपने को रोक लेता। कुछ दिन बीता धीरे-धीरे उसके भीतर एक अजीब शांति घटित होने लगी। अब उसे किसी की आवश्यकता का अनुभव नहीं होने लगा। वह बस मौन बैठा रहता। इधर उसके दोस्त को चिंता होने लगी कि एक माह के दिन पर दिन बीत रहे हैं पर उसका दोस्त है कि बाहर ही नहीं आ रहा है। माह के अब अंतिम 2 दिन शेष थे, इधर उस दोस्त का व्यापार चौपट हो गया वो दिवालिया हो गया। उसे अब चिंता होने लगी कि यदि उसके मित्र ने शर्त जीत ली तो इतने पैसे वो उसे कहां से देगा। वो उसे गोली मारने की योजना बनाता है और उसे मारने के लिए जाता है। जब वो वहां पहुँचता है तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वो दोस्त शर्त के एक माह के ठीक एक दिन पहले वहां से चला जाता है और एक खत अपने दोस्त के नाम छोड़ जाता है। खत में लिखा होता है-ए यारे दोस्त इन एक महीनों में मैंने वो चीज पा ली है जिसका कोई मोल नहीं चुका सकता। मैंने खुद को और परमात्मा को जान लिया है।

संदेश: परीक्षा की घड़ी में खुद को चिंता और भय में न डालें, उस परमात्मा की निकटता को महसूस करें

अनुभूतिगत प्रक्रिया में जीवन दर्शन का रहस्य, ईश्वरीय साक्षात्कार का पवित्र स्वरुप

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 32

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

ईश्वरीय तत्व बोध और निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । मानवता के बोध में संवेदनशील संदर्भ एवं प्रसंग का समावेश सम्पूर्ण जीवन की वास्तविकता को प्रमुखता से प्रतिपादित करता है, जिसमें जीवन का दार्शनिक पक्ष अपने आत्म एवं परमात्म दर्शन के साथ स्वयं के अस्तित्व की सत्यता को उद्घटित कर देता है। जीवन का आत्मिक आनंद और उससे जुड़ी सात्विकता ही व्यक्ति को स्वयं की बोधगम्यता से परिचित कराती है, जिसके परिणाम स्वरुप सत्य दर्शन का साक्षात्कार सुनिश्चित होता है। मानवीय पृष्ठभूमि के अंतर्गत सम्मिलित विभिन्नताओं के मध्य स्वयं की उपस्थिति का निमित्त भाव व्यक्तिगत दृष्टिकोण को अनुभूतिगत प्रक्रिया के केंद्र में स्थापित कर देता है जहां से जीवन दर्शन का रहस्यमयी पक्ष उजागर होता है। जीवन में निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति पूर्व जन्म के संचित पुण्य के परिणाम स्वरुप जब होती है तब ईश्वरीय साक्षात्कार के माध्यम से आत्म दर्शन की स्थितियां निर्मित होती हैं। मानव अपने सम्पूर्ण जीवन काल में परमसत्ता के बोध के लिए साधना के विभिन्न मार्ग का अनुसरण करके आत्मा की अलौकिक प्रवृतियों को पुरुषार्थ द्वारा परमात्म दर्शन की अनुभूति तक पहुंचता है।

समभाव की विराट दृष्टि मानव के उच्च स्वरुप को प्रकट करती है जिसमें जीवन दर्शन का यथार्थ व्यक्तिगत धर्म-कर्म की प्रक्रिया को लौकिकता एवं भौतिकता से पूर्णतः उन्मुक्त कर देता है। जीवन के अनुभूतिगत पक्ष मानवता के सानिध्य को स्थूल लोक में जीवन बंधन से गुजरते हुए देखते हैं और अंततः भक्ति मार्ग की प्रक्रिया द्वारा उससे मुक्ति के लिए प्रयासरत हो जाते हैं । व्यक्तिगत मान्यताओं के आधार पर आस्था और उससे संबंधित विश्वास का जीवन में देव शक्ति के प्रति सदा अनुराग होता है लेकिन परिस्थितिजन्य स्थितियों में प्रायः स्वयं को लोहे की जंजीर से उन्मुक्त होने के लिए विचार पक्ष को विशेष महत्व प्रदान किया जाता है। जीवन में धारणा की व्यावहारिकता स्वाध्याय की प्रक्रिया में होती है जिससे मनुष्यता की अवधारणा को कर्मणा सेवा के माध्यम से क्रियान्वित करने की इच्छा शक्ति जीवन के दार्शनिक पक्ष को परिलक्षित करती है।

जीवन की पार लौकिकता में उन्मुक्त परमात्म दर्शन

राजयोग से आत्मिक अनुभूति का नैसर्गिक पक्ष

अन्तःकरण की अभिव्यक्ति सर्वजन हिताय के परिवेश में कार्यरत होने से अनुभूतिगत प्रक्रिया में जीवन दर्शन का रहस्य पूर्णतया सर्वधर्म समभाव के समदृश्य परिवर्तित हो जाता है जो स्वयं के अस्तित्व का प्रामाणिक सन्दर्भ होता है।

आत्मिक कल्याण के परिवेश में स्वयं के दिग्दर्शन का पर्याय आत्म दर्शन की स्थिति है, जिसमें आध्यात्मिक चेतना के साथ पुरुषार्थ की ओर व्यक्ति सहजता से अग्रसर हो जाता है।

नैसर्गिक रूप से अलौकिक एवं अभौतिक श्रेष्ठता के प्रति अंतर्मन अभिमुखित रहता है, क्योंकि सूक्ष्म लोक की विश्वसनीयता वास्तविक रूप से जीवन संबंध की शुचिता को बनाए रखने में सहायक होती है । ज्ञान के मार्ग पर गतिशील होने से आत्म शक्ति में बढ़ोतरी होना स्वाभाविक है, जिसमें सम्पूर्ण ज्ञान युक्त अनुभव सोने की जंजीर बनकर साधक के समक्ष उपस्थित होता है तब स्वमान की स्थिति चेतना की चेतनता को बनाए रखती है । आत्म परिष्कार की प्रक्रिया में सर्व के उत्थान के लिए चिंतन की उत्कृष्टता का समावेश आत्मा के अध्ययन में मददगार होने से मन-वचन एवं कर्म में साम्य की स्थापना सहज हो जाती है। जीवन में श्रेय एवं प्रेय को अर्पण करने की स्थिति आत्मिक उच्चता का परिणाम है जो सर्वे भवन्तु सुखिनः की विराटता द्वारा ईश्वरीय सत्ता के सानिध्य से आत्म स्वरुप को प्राप्त करता है।

मानव अपने संपूर्ण जीवन काल में आत्मिक अनुभूति के साथ परमात्म अनुभूति की अभिलाषा लिए हुए धर्म-कर्म, अध्ययन, पुरुषार्थ एवं राजयोग मौन की साधना हेतु प्रयासरत रहता है। पुरुषार्थ की यथार्थता आत्मिक उच्चता को अलौकिक बना देती है जिससे जीवन में पारलौकिकता की स्वीकारोक्ति सुनिश्चित होती है और परमात्म दर्शन से ईश्वरीय आशीष, आत्मिक धन्यता में परिवर्तित हो जाता है । ध्यान की श्रेष्ठ अवस्था द्वारा मूल लोक में आत्मिक स्थिति एवं जीवन मुक्ति की अनुभूति करना पवित्र मार्ग का प्रमाण है जो परमात्म शक्ति से परम आनंद की प्राप्ति कराता है।

जीवन के व्यवहार पक्ष की प्रबलता आत्मिक पवित्रता की अक्षुणयता को अमृतवेला के ब्रह्ममुहूर्त से संप्रेषित करती है जिसमें मंसा सेवा का श्रेष्ठ संकल्प प्रकृति के पांच तत्वों को पवित्र बना देता है । विश्व में सम्पूर्ण प्राणी जगत को आध्यात्मिक चेतना ने परिष्कार की वह पवित्रतम स्थिति प्रदान की है जिसमें समतामूलक श्रेष्ठताएं विद्यमान होकर सदैव वसुधैव कुटुम्बकम की व्यावहारिकता को सदा के लिए स्वीकृति प्रदान करती है ।

दूसरों के लिए भी वही चाहो जो तुम अपने लिए चाहते हो

महर्षि वेदव्यास
आध्यात्मिक महापुरुष

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

ब्राह्मण मत पूजिए जो होवे गुणहीन। पूजिए चरण चंडाल के जो होवे गुण प्रवीन।।

संत रविदास
कवि संत

मेरी कलम से

मेजर हर्ष कुमार
सेक्रेटरी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

■ शिव आमंत्रण

ब्रह्माकुमारीज़ का अनोखा ज्ञान

मैं ब्रह्माकुमारीज़ की विचारधारा से काफी समय से अवगत हूं। आप उनके बताए सभी विचारों को जीवन में अपनाकर खुद को सुखी बनाकर समाज को सुखी बनाने में मददगार साबित हो सकते हैं।

आबू रोड । आज शिक्षा युवा अनुकूल होनी चाहिए लेकिन शिक्षा का जो मूल उद्देश्य है उसे न ही हमें भूलना चाहिए और न ही आने वाली पीढ़ी को भुलाने देना चाहिए। आज तक शिक्षा इसी तरह से प्रवाहित होती रही है, जहां हमने सीखा है-सदाचार क्या होता है? हमारे नैतिक कर्तव्य क्या होने चाहिए। अगर हम विचार करें तो शिक्षा का मूल उद्देश्य हमें संपूर्ण मानव बनना है। जहां इस संसार में हम सबके साथ रहते हुए अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर एक सुखद सामंजस्य स्थापित कर सकें। जिससे एक अच्छा समाज बनता जाता है और एक अच्छा समाज एक अच्छे राष्ट्र को निर्माण करता है। ब्रह्माकुमारीज़ का अनोखा ज्ञान शिक्षा जगत में प्रेरणादाई बनेगा। हमारा भारत कृषि प्रधान क्षेत्र है और हमारी अधिकतर आबादी कृषि पर ही निर्भर करती है।

आज हम सबको समाज में रासायनिक खेती का दुष्प्रभाव देखने को मिल रहा है जिससे कृषि की हालात दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है तथा किसान तनावग्रस्त एवं आर्थिक समस्याओं से भी जूझ रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का भी उद्देश्य है कि राजयोग के माध्यम से किसानों का मनोबल बढ़ाकर सात्विक एवं पौष्टिक शाश्वत यौगिक खेती विकसित करना और करवाना। जहां आज किसानों का उत्पादन लागत बहुत होने के कारण उस अनुसार मुनाफा नहीं होता जिससे आर्थिक तंगी भी रहती है। इससे उबरने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की यह यौगिक खेती पद्धति किसानों को सशक्त बनाएगी। कम से कम लागत में ज्यादा मुनाफा कराएगी। फिर तो किसान आत्मनिर्भर होंगे ही, साथ में पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाने में यह यौगिक पद्धति काफी मददगार साबित होगी। इसलिए आप सभी देशवासियों से विनती करता हूं कि आप सभी यौगिक पद्धति का अनुशरण अवश्य करेंगें। क्योंकि मैं ब्रह्माकुमारीज़ के विचारधारा से काफी समय से अवगत हूं। आप उनके बताए सभी विचारों को जीवन में अपनाकर खुद को सुखी बनाकर समाज को सुखी बनाने में मददगार साबित हो सकते हैं। वर्तमान समय में आध्यात्मिक ज्ञान और मूल्य शिक्षा की युवाओं को बहुत जरूरत है।

मन में सभी के प्रति शुभभावना कल्याण की भावना जाग्रत करें

■ **शिव आमंत्रण** ■ **शाहपुरा/जयपुर (राजस्थान)** ■ कस्बे के वार्ड 6 में स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवाकेंद्र पर जयपुर सबजोन प्रभारी बीके सुषमा बहन के मुख्य आतिथ्य में महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। बीके सुषमा बहन ने कहा कि अपने मन के विकारों को शिव पर अर्पित कर अपने मन में सब के प्रति शुभ भावना और कल्याण की भावना को जाग्रत करें। ये ही सच्ची शिवरात्रि पर्व मनाना है। पार्षद इंद्राज पलसानिया, पूर्व प्राचार्या कांता कामरा व आयुष चिकित्सक डॉ. अर्चना योगी ने कहा कि शाहपुरा में ब्रह्माकुमारीज संस्था का होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। पार्षद एडवोकेट नरेश शर्मा, लालचंद जाट, मितेश मंगल, रजनीश हॉस्पिटल के मैनेजमेंट प्रभारी वैभव शर्मा ने भी विचार व्यक्त किये। शाहपुरा संचालिका बीके सुलभा बहन ने आभार माना।

कलाकारों ने 'सबका परमपिता एक' नाटक से दिया संदेश

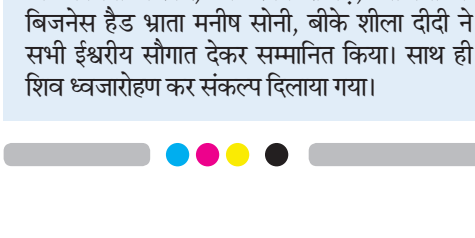

■ **शिव आमंत्रण** ■ **बहल (हरियाणा)** ■ 85वीं महाशिवरात्रि महोत्सव में 'सबका परमपिता एक ' नामक नाटक का बाल कलाकारों ने मंचन किया। इस दौरान नायब तहसीलदार सुरेश कौशिक, मार्केट कमेटी के चेयरमैन साधुराम पनिहार, बी के शकुंतला, बीके पूनम मौजूद रहीं।

शिव संदेश रैली से दिया जीवन में सद्गुण अपनाने का संदेश

■ **शिव आमंत्रण** ■ **बरनाला (पंजाब)** ■ शिवरात्रि महोत्सव पर रैली निकालकर शिव ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान जीवन में सद्गुण अपनाने का संदेश दिया गया। इस दौरान पार्षद नरेंद्र नेता, एसडी कॉलेज के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. प्रो. अमित, समाजसेवी हरवंशलाल, वरनाला सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ब्रज बहन, बीके मूर्ति बहन, बीके पुष्सप व अन्य मौजूद रहे।

महाशिवरात्रि पर किया ध्वजारोहण

■ **शिव आमंत्रण** ■ **वाशी (नवी मुंबई)।** 85वीं शिव जयंती के उपलक्ष में शिव ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम में जिला परिषद् सदस्य बहन चित्रा पाटिल, डॉ. कविता केरकर, डॉ. रतन राठौड़, जीटीवी के बिजनेस हैड भ्राता मनीष सोनी, बीके शीला दीदी ने सभी ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया। साथ ही शिव ध्वजारोहण कर संकल्प दिलाया गया।

महाशिवरात्रि ■ 21 दिवसीय शिव जयंती महोत्सव आयोजित

जीवन दिव्य बनाने के लिए किया प्रेरित

विधायक पूरन प्रकाश ने संस्था के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू की मधुर स्मृतियों को सांझा किया, भाजपा जिलाध्यक्ष ने संस्था के कार्यों को सराहा

■ **शिव आमंत्रण** ■ **मथुरा (उप्र)** ■ परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का यादगार महाशिवरात्रि पर्व ब्रहमाकुमारी संस्था द्वारा धूमधाम से मनाया गया । 21 दिन चले इस आयोजन में रिफाइनरी नगर, लक्ष्मीनगर और बलदेव छेत्र में जनसंपर्क और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को बुराईओं और व्यसनों से दूर रहने व ईश्वरीय ज्ञान द्वारा अपने जीवन को दिव्य बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

सेवा केंद्र प्रभारी बीके कृष्णा दीदी ने बताया कि संस्था विगत 85 वर्षों से विश्व के 147 देशों में आध्यात्मिक ज्ञान की निःशुल्क शिक्षा दे रही है। शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए उन्होंने कहा कि इस कलयुगी रात्रि का तम हरने और सतयुगी सृष्टि का सृजन करने के लिए सभी आत्माओं के पिता परमपिता शिव विगत 85 वर्षों से ब्रह्मा तन का आधार लेकर राजयोग का ज्ञान दे रहे हैं। शिव के अन्य नाम नीलकंठ और अमरनाथ भी है। इसका अर्थ है कि वह स्वयं समस्त जगत की बुराइयों और अवगुण रूपी विष का पान करके सभी को ज्ञानामृत पिलाकर अमरत्व की प्राप्ति कराते हैं। इसी की यादगार में भक्तगण शिवलिंग पर विषैले फल और फूल अर्पण करते हैं।

कार्यक्रम में विधायक पूरन प्रकाश ने संस्था के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू शिविर की मधुर स्मृतियों को सांझा किया । भाजपा जिला अध्यक्ष मधु शर्मा ने संस्था द्वारा किए जा रहे समाज उत्थान के प्रयासों की सराहना की। इस मौके पर थाना प्रभारी नरेंद्र यादव, स्काउट और गाइड प्रभाग के कमिश्नर डॉ. कमल कौशिक, एनसीसी कमांडर पवन, मथुरा रिफाइनरी के वरिष्ठ अधिकारी, चिकित्सा और शिक्षा विभाग के पदाधिकारी और संस्था के सुदूर ग्रामीण अंचलों से हजारों की संख्या में भाई-बहनों ने सहभागिता की ।

परमात्मा पर अर्पण कर दें बुराइयां

■ **शिव आमंत्रण** ■ **मंडी बामोरा/बीना (मप्र)** ■ महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मंडी बामोरा सेवाकेंद्र पर शिव ध्वजारोहण किया गया। शिव ध्वज के नीचे सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी दीदी ने संकल्प कराया कि आज से हम सभी सभी के प्रति शुभभावना, शुभ कामना रखेंगे। संसार के सभी प्राणियों के प्रति दया,करुणा का भाव रखेंगे। सुख देंगे, सुख लेंगे। कार्यक्रम में बीके जानकी दीदी ने कहा कि महाशिवरात्रि महा पर्व हमें सिखाता है कि परमपिता शिव परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों अपनी बुराईयां, गलत संस्कार, जीवन के अवगुण मुझ पर अर्पण कर दो। महाशिवरात्रि पर हम शिवलिंग पर अक, धतूरा, बेलपत्र अर्पित करते हैं जिसका आध्यात्मिक महत्व है कि परमात्मा हमसे अपनी बुराईयों का दान करने का आह्वान करते हैं। परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों तुम एक जन्म मेरे बताए मार्ग पर चलो तो मैं तुम्हें जन्मोजन्म की स्वर्ग की बादशाही वर्से में दूँगा। तुम्हारा ये जन्म अमूल्य है। तुम बहुत भाग्यशाली हो। अब इस जन्म को सफल करो। उन्होंने कहा कि हम खाने पीने का तो व्रत करते हैं। आज से मन का भी व्रत करें। रोज सुबह व्रत ले कि आज हम शुभ संकल्प ही करेंगे। आज के दिन हम सभी को सुख देंगे। सभी के प्रति शुभ कामना रखेंगे।

अतिथि ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष नवीन पालीवाल ने कहा कि आज यहाँ से सभी संकल्प लेकर जाएं कि जो बातें दीदी ने बताई हैं उन्हें अपने जीवन में धारण करेंगे। इस दौरान अतिथि के रूप में बांके बिहारी वेयर हाउस के चेयरमैन अमित अग्रवाल, नवांकुर हायर स्कूल के डायरेक्टर शशिकांत श्रीवास्तव, गुप्ता टेंट हाउस के संचालक कमलेश गुप्ता , सुरेशचंद्र गुप्ता सहित अन्य भाई बहिन मौजूद रहे।

अटेंशन रखने से टेंशन होगा दूर

■ **शिव आमंत्रण** ■ **फरीदाबाद(हरियाणा।** ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर 21-डी की ओर से महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में झंडावंदन किया गया। इसमें बड़खल विधायक सीमा त्रिखा, पुलिस चौकी इंचार्ज हरिकिशन मुख्य रूप से मौजूद रहे। सेवाकेंद्र संचालिका बीके प्रीति बहन ने टेंशन से मुक्ति पाने की सहज विधि बताई। उन्होंने कहा कि टेंशन शब्द के आगे ए यानी अटेंशन कर दीजिए तो टेंशन से अपने आप ही मुक्ति मिल जाएगी। हम सब महाशिवरात्रि पर जो व्रत रखते हैं तो व्रत हमें अपनी बुराइयों का रखकर साथ-साथ अक धतूरा जैसे जहरीले पदार्थ चढ़ाने की बजाय अपने अंदर के जहर यानी कि कड़वापन चढ़ाओ। समाजसेवी और मोटिवेशनल स्पीकर डॉक्टर एमपी सिंह ने भी बहुत सी मोटिवेशनल बातें बताईं। अभिषेक भाई एंड ग्रुप ने कर्मफल पर एक सुंदर नाटक प्रस्तुत किया। उज्जवल ने शंकर जी का तांडव प्रस्तुत किया।

सम्मान,सहकार और सृजन है नारी

■ **शिव आमंत्रण** ■ **फरीदाबाद (हरियाणा)।** ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर 21-डी सेवाकेंद्र की ओर से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस दौरान सेक्टर 19 की संचालिका बीके हरीश बहन ने बताया कि नारी कमजोर नहीं नारी शिव शक्ति है। सम्मान, सृजन और सहकार है नारी इसीलिए नारियों का सदा सम्मान करो। हरियाणा स्टेट महिला की को-ऑर्डिनेटर अनीता शर्मा ने कहा कि महिला दिवस एक दिन नहीं हर दिन महिला दिवस होता है। सिविल जज किम्मी सिंघला ने कहा कि बेटियां हर ऊंचाइयों को छू सकती हैं। बेटियां वह हर कार्य कर सकती हैं जो बेटे कर सकते हैं। लायंस क्लब प्रेजिडेंट तान्या लूथरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सेक्टर 21-सी की संचालिका बीके ज्योति ने कहा कि घर को स्वर्ग बनाना या नर्क बनाना यह महिलाओं के ऊपर है, इसीलिए हमें यह संकल्प लेना है कि हम बदलेंगे जग बदलेगा। सेक्टर 21-डी की संचालिका बीके प्रीति बहन ने सभी को योगाभ्यास कराया। मोनिका बहन एंड ग्रुप ने नाटक की प्रस्तुति दी।

निराकार परमात्मा तीनों सूक्ष्म देवताओं के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं

■ **शिव आमंत्रण** ■ **गया (बिहार)।** सेवाकेंद्र पर शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शीला बहन ने कहा कि शिव मंदिरों में शिव की प्रतिमा के उपर रखे हुए घड़े से प्रतिमा पर बूंद-बूंद जल निरंतर पड़ता की रहता है। इसका आध्यात्मिक रहस्य है कि सच्चे स्नेह के साथ परमात्मा शिव से बुद्धि की लगन लगी रहे। निराकार परमात्मा स्थापना, पालना तथा विनाश के दिव्य कर्तव्यों को कराने वाले तीनों सूक्ष्म देवताओं के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं।

महाशिवरात्रि केरेडारी सेवाकेंद्र की ओर से निकाली गई झांकी, दिया शिव संदेश

शिव कल्याणकारी, शंकर करते विनाश

लोधी रोड सेवाकेंद्र की ओर से ई-संगोष्ठी का आयोजन

■ शिव आमंत्रण । केरेडारी/झारखंड । 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य पर ब्रह्माकुमारीज़ के केरेडारी की ओर से स्वर्णिम झांकी निकाली गई। झांकी में परमपिता परमात्मा शिव तथा शंकर के महान अंतर का चित्र प्रस्तुत किया गया। बीके सरिता बहन ने बताया कि परमात्मा शिव ही निराकार हैं जिन्हें शिवलिंग के रूप में दिखाते हैं जबकि शंकर को शरीरधारी देवता के रूप में दिखाते हैं। परमात्मा शिव रचयिता हैं जबकि शंकर उनकी रचना हैं। जब शिव को कल्याणकारी कहते हैं जबकि शंकर को विनाशकारी देवता कहते हैं। जब दोनों का नाम, रूप, कर्तव्य अलग हैं तो दोनों एक कैसे हो सकते हैं। शिव ही परमात्मा हैं इसलिए उन्हें शिव परमात्मये नमः कहते हैं। बाकी सभी को देवताएं नमः कहते हैं। झांकी में सेवाकेंद्र की मुख्य संचालिका बीके सरिता बहन सहित बीके योगेंद्र भाई, यशोदा माता, बीके गोविन्द भाई, धनिनाथ भाई, सुभाष भाई,रोहन भाई, हरि भाई, उमेश भाई, रूपेश भाई, किसुन भाई, बीके आनन्द भाई, बीके भीम भाई, बीके रंजन भाई, बीके पारस भाई, निरंजन भाई, बीके भरत भाई,रेखा माता,बसंती माता,हीरा माता, बीके अंजली बहन, बीके पूजा बहन,बीके खुशबू बहन, बीके यशोदा बहन,बीके रेखा बहन,बीके अंशु बहन, बीके निशा बहन, सुषमा माता,रिंकी माता तथा अन्य बीके भाई बहनें उपस्थित थे।

सेवाकेंद्र पर शिव ध्वजारोहण करते हुए बीके भाई-बहनें।

थाना प्रभारी अमित कुमार द्विवेदी ने कहा कि जब भी मैं ब्रह्माकुमारी बहनों के संपर्क में आता हूं मुझे भागदौड़ की जिंदगी में शांति का अनुभव होता है।

युवा है देश और विश्व नवनिर्माण के कर्णधार

■ शिव आमंत्रण । वाराणसी (उप्र) । देश की रक्षा का संकल्प मन में लिए अपने शैक्षिक काल से ही प्रतिबद्ध एनसीसी कैडेट्स के बीच ब्रह्माकुमारीज़ बहनों ने पहुंचकर युवा शक्ति एवं उनका दायित्व विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में उपस्थित करीब 300 एनसीसी कैडेट्स को राजयोग शिक्षिका बीके तापोशी और बीके प्रभा ने जीवन में आध्यात्मिकता एवं नैतिक मूल्यों को शामिल करने का आह्वान किया। साथ ही राजयोग करने की विधि समझाई।

इस अवसर पर लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान ने बहनों का धन्यवाद देते हुए सभी कैडेट्स को मैडल प्रदान करने के साथ उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। हुए राजयोग प्रशिक्षिका बीके तापोषी ने कहा कि युवाओं का जीवन अनमोल है। देश और विश्व के नवनिर्माण के कर्णधार युवाओं को आज अपने मूल्य एवं उपयोगिता को सही अर्थ में समझकर उसे अपनाने की जरूरत है। युवा काल ही वह अनमोल घड़ी है, जिसमें हम अपने जीवन, समाज, देश और विश्व को उत्थान या पतन की ओर ले जा सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था का युवा प्रभाग युवाओं में नकारात्मकता, बुराइयां, फैशन व व्यसन एवं अनेक अनैतिक कार्यों में लिप्त मानव को उससे मुक्त कर जीवन में दिव्यता, शुद्धता, सादगी, नम्रता एवं उच्च विचार को आत्मसात करने एवं कराने की सेवा में तत्पर है। लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान ने कैडेट्स को युवा अवस्था में युवाओं के अंदर निहित मानसिक एवं शारीरिक बल के साथ आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के बल द्वारा स्वर्णिम युग की एक सुखमय संसार की स्थापना में सहयोगी बनने की अपील की। बीके प्रभा, बीके प्रियंका, बीके पूजा ने भी संबोधित किया।

ब्रह्माकुमारीज मार्ग की शिलापट्टी का अनावरण

शिलापट्टी का अनावरण करते हुए मऊ नगर पालिका परिषद के चेयरमैन तैय्यब पालकी, साथ में बीके विमला तथा अन्य बीके बहनें।

मानवता की अनोखी सेवाओं की मिसाल है ब्रह्माकुमारी संस्था

■ शिव आमंत्रण । मऊ (उप्र) । वैश्विक स्तर पर मानवता के अनोखी सेवाओं की मिसाल है ब्रह्माकुमारी संस्था। हमें ऐसी संस्था पर गर्व है जो जाति, धर्म, भाषा, सम्प्रदाय आदि अनेक भेदों से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। आज हमें गर्व है कि हम ऐसी महान संस्था के नाम पर इस मार्ग का नामकरण कर रहे हैं। उक्त बातें मऊ नगरपालिका परिषद के चेयरमैन तैय्यब पालकी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि संस्था के सानिध्य में आकर आंतरिक सुख, शान्ति एवं सुकुन की अनुभूति होती है। वे मऊ, गोरखपुर हाईवे से लगे मार्ग पर ब्रह्माकुमारीज़ मार्ग के शिलापट्टी का अनावरण कर रहे थे। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विमला ने कहा विश्व पिता परमात्मा की संतान हम सभी आपस में भाई-भाई हैं। इसी विश्व भ्रातृत्व की भावना से ओतप्रोत यह वैश्विक परिवार आप सभी का अपना परिवार है। जहां हम सभी प्रेम, दिव्यता, पवित्रता, सुख, शान्ति एवं आनन्द की सुखद अनुभूति कर सकते हैं।

अभियान के दौरान ही 60 सुरक्षाकर्मियों ने लिया व्यसनमुक्ति का संकल्प

व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के बाद ग्रुप फोटो में खुशी जाहिर करते हुए सुरक्षाकर्मी।

■ शिव आमंत्रण । राउरकेला (ओडिशा) । राउरकेला सेवाकेंद्र द्वारा मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत अभियान के तहत एनआईटी के सुरक्षा बल कर्मियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बीके राजीव, बीके चितरंजन और बीके धनंजय ने सुरक्षाकर्मियों को राजयोग के लाभ बताए और नशामुक्त जीवन बनाने की दृढ़ प्रतिज्ञा कराई। इसके तहत नशा मुक्ति की विस्तृत जानकारी प्रोजेक्टर शो के माध्यम से देते हुए सभी को सहज राजयोग का अभ्यास भी करवाया गया।

इस दौरान करीब 60 सुरक्षाकर्मियों ने संकल्प भी लिया कि इस जहर को अपने जीवन में कभी स्वीकार नहीं करेंगे एवं अपने प्रियजनों को भी इससे बचाएंगे। इस मौके पर सभी ने राजयोग सीखने की इच्छा भी उजागर की। संचालन बीके राजीव सहित बीके चित्तरंजन और बीके धनंजय ने संपन्न किया। सभी आमंत्रित मेहमानों को बीके उर्वशी ने ईश्वरीय उपहार देकर राजयोग को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हुए सभी का मुख मीठा करवाया। यह कार्यक्रम एनआईटी कैंपस में सुरक्षाकर्मियों के आवासीय ब्लॉक में रखा गया था।

कोरोना से मुक्त हुए लोगों के लिए निकाली गई शांतियात्रा।

हरिबोल सेवा समिति द्वारा बीके ममता और बीके दर्शन का सम्मान किया गया

कोरोना से मुक्त लोगों को भावांजली देने के लिए निकाली शांति यात्रा

■ शिव आमंत्रण । आगरा । कोरोना काल में जिन लोगों ने भी शरीर छोड़ा उनको भावांजलि देने के लिए शांति यात्रा का विशेष आयोजन आगरा में अन्तर्राष्ट्रीय नटरांजलि थियेटर ग्रुप अध्यक्ष अल्का सिंह और संयोजक बंटी ग्रोवर के द्वारा किया गया जिसमें पिपलामंडी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ममता, बीके रीना, शाहगंज सेवाकेंद्र से बीके दर्शन समेत अन्य बहनों का मुख्य योगदान रहा। यह यात्रा आगरा किला से आरंभ होकर आगरा होटल में समाप्त हुई जिसमें मुख्य रूप से भगवताचार्य अरविंद महाराज, विधायक योगेंद्र उपाध्याय की धर्मप|ी प्रीति उपाध्याय समेत विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी समाजसेवी महिलाएं उपस्थित रहीं। इसके साथ ही हरिबोल सेवा समिति द्वारा एकादशी उद्यापन का आयोजन महालक्ष्मी मंदिर बलेश्वर में किया गया जिसमें बीके ममता और बीके दर्शन को पट्टा पहनाकर व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बहनों ने लखनऊ से आए शासकीय आचार्य पंडित शिवाकांत शास्त्री को साहित्य देकर ज्ञान चर्चा की।

बंडोल सेवाकेंद्र बंडोल सेवाकेंद्र के नए भवन का ग्रह प्रवेश

भवन नहीं तीर्थ है शिव शक्ति सरोवर

■ शिव आमंत्रण । बंडोल (मप्र) । बंडोल शिव शक्ति सरोवर सेवाकेंद्र के ग्रह प्रवेश समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर इंदौर जोन की क्षेत्रीय संयोजिका बीके हेमलता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अनीता ने अपनी शुभकामनाएं दी। बीके अनीता ने कहा कि अनेक भाई-बहनों ने शक्ति सरोवर के निर्माण में अपना तन-मन-धन लगा दिया है। भवन के उद्घाटन अवसर पर ऐसा लग रहा है कि ये बहुत बड़ा तीर्थ है। अभी तक जो सेवाएं चल रही थीं वह भवन निर्माण के बाद दिन दोगुनी रात चौगुनी हो जाएंगी। इस दौरान शहर में शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सेवाकेंद्र से जुड़े बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और लोगों में परमात्मा के दिव्य अवतरण के प्रति जागृति लाई। इस अवसर पर सभी वरिष्ठ बहनों सहित वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ज्योति, बीके माधुरी, बीके कुसुम, माउंट आबू से आए बीके शक्तिराज ने रिबन काटकर भवन का उद्घाटन किया। बीके शक्तिराज ने कार्यक्रम में आए सभी आत्माओं का स्वागत किया। संपूर्ण जिले के हजारों भाई बहनों ने इसमें हिस्सा लिया।

नये भवन का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए बीके हेमलता बहन, बीके अनीता बहन, बीके कुसुम बहन, बीके ज्योति बहन और बीके शक्तिराज।

अभियान युवाओं के लिए 'वैश्विक शांति' अभियान में व्यक्त किए विचार

युवा जो चाहें कर सकते हैं

लोधी रोड सेवाकेंद्र की ओर से ई-संगोष्ठी का आयोजन

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथि।

■ शिव आमंत्रण । आबूरोड । युवाओं को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग ने 'युवाओं के लिए वैश्विक शांति' नामक अभियान की पहल की है। इसकी ऑफिशियल लॉचिंग मुख्यालय से ऑनलाइन सम्मेलन द्वारा की गई।

इसमें छत्तीसगढ़ के कैबिनेट मंत्री उमेश पटेल सहित संस्थान व प्रभाग के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने अपने शुभकामना संदेश दिए। अहमदाबाद की हेरिटेज प्रोफेशनल अवनी वारिया ने कहा, अपनी अंतरात्मा से शांति बहुत महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति शांत स्वरूप है तो वह अपने परिवार में, समाज में शान्ति प्रस्थापित कर सकता है। ऐसे करते करते धीरे- धीरे देश में शान्ति प्रस्थापित हो जायेगी। हम अभी वैश्विक शान्ति की बात कर रहे हैं तो हर एक को उसके अनुसार अपने को ढालने की जरूरत है।

अभिनेता अमित धवन ने कहा कि युवा जीवन हर एक का सुवर्ण काल होता है। इसे हम आध्यात्मिकता से जोड़ दें तो दिव्यता तो है ही उसके साथ मुझे लगता है हर तरफ से लाभ मिल सकता है। मेरे जीवन में सब तरफ से मुझे आध्यात्मिकता का लाभ मिला। अफ्रीका में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका बीके वेदान्ती ने कहा कि यूथ जो करना चाहें वह कर सकते हैं क्योंकि यूथ जो है वह पावर है, यूथ क्रिएटिविटी है, यूथ में उमंग-उत्साह है। विश्व के लिए वह बहुत कुछ कर सकता है। अहमदाबाद युवा प्रभाग की निदेशिका बीके चन्द्रिका ने कहा कि इस कार्यक्रम से पूरे विश्व को शान्ति प्राप्त हो ऐसी कामना है। ब्रह्माकुमारीज के महासचिव बीके निर्वैर और युवा प्रभाग की निदेशिका दादी रतनमोहिनी ने भी आशीर्वचन दिए। अभियान के अंतर्गत प्रत्येक महीने के पहले रविवार को मुख्यालय से निर्धारित थीम पर राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। आगे सभी सेवाकेंद्रों द्वारा भी वेबीनार, युवा संवाद, प्रतियोगिताओं और सोशल मीडिया द्वारा कार्यक्रम होंगे। इस अभियान से जुड़ने वाले युवाओं की आयु सीमा 18 से 35 वर्ष तय की गई है।

आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी को सांसद ने सराहा

■ शिव आमंत्रण । आगरा । रावी इवेंट द्वारा मीना बाजार में 10 दिवसीय मिडनाइट बाजार मेले का आयोजन किया गया। इसका इसका उद्घाटन सांसद एसपी सिंह बघेल, समाजसेविका मधु बघेल द्वारा किया गया। मेले में ब्रह्माकुमारीज़ के शाहगंज और पीपलमंडी सेवाकेंद्र के माध्यम से चित्र प्रदर्शनी का स्टॉल लगाया गया। इसका अवलोकन सांसद एसपी सिंह बघेल सहित कई गणमान्य लोगों ने किया। साथ ही समाज को श्रेष्ठ शिक्षा व जानकारी देने के लक्ष्य की प्रशंसा की। इस अवसर पर शाहगंज सेवाकेंद्र प्रभारी बीके दर्शन, पीपलमंडी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ममता समेत अन्य बहनों ने अवलोकन कर्ताओं को ईश्वरीय संदेश देने के साथ ही राजयोग सीखने का आह्वान किया। मेले में खरीददारी, मनोरंजन के साथ धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों को भी प्राथमिकता दी गई। इसी कढ़ी में रावी इंवेट द्वारा बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ अभियान को बढ़ावा देने के लिए आयोजन किया था, जिसमें बीके बहनों ने भी अपनी सहभागिता निभाई।

शाश्वत यौगिक खेती जवां में किसान कल्याण मिशन कृषि गोष्ठी का आयोजन

नाटक से दिया प्रकृति बचाने का संदेश

प्रकृति की पुकार नाटक प्रस्तुत करते हुए कलाकार एवम् श्रोता गण।

■ शिव आमंत्रण

हिरदुआगंज (उप्र) । जवां में किसान कल्याण मिशन कृषि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें संस्था से जुड़े पूर्व डीएफओ सत्यप्रकाश शर्मा तथा बीके मीना ने शाश्वत यौगिक खेती विषय पर अपने व्याख्यान दिए और बीके प्रेरणा समेत अन्य लोगों ने प्रकृति की पुकार नाटक प्रस्तुत किया। इसके साथ ही धनीपुर, अकराबाद और अतरौली में बीके सदस्यों ने कृषि का महत्व बताते हुए शाश्वत यौगिक खेती करने की अपील की और अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट किए। सेवानिवृत डीएफओ बीके सत्यप्रकाश शर्मा ने कहा कि परमात्मा ने जब यह सृष्टि रची थी, तब भारत में स्वर्णिम युग था। कृषि अपने सर्वश्रेष्ठ युग में थी। मौसम सुखदायी, मिट्टी बहुत उपजाऊ थी, प्रदूषण बिल्कुल नहीं था। कालांतर में युग बदले तो प्रकृति की शक्ति क्षीण होती चली गई। तब परमात्मा स्वयं आकर इसे सतोप्रधान बनाते हैं। शाश्वत यौगिक खेती में हम जब परमात्मा से कनेक्ट हो कर उनसे लाइट-माइट लेकर अपनी फसल पर फैलाते हैं तो परिणाम आश्चर्यजनक रूप से लाभदायक होते हैं।

बीके प्रेरणा, बीके ज्योति तिवारी, बीके सुनील, बीके सुभाष ने प्रकृति की पुकार नाटक प्रस्तुत किया।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य 110 रुपए, **तीन वर्ष** 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

अंतरराष्ट्रीय समाचार

एबरडीन में मनाया वर्ल्ड होलोकास्ट मेमोरियल डे

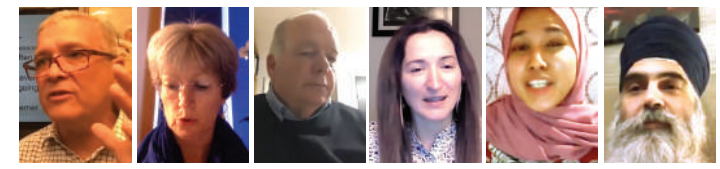

■ शिव आमंत्रण । एबरडीन । वर्ल्ड होलोकास्ट मेमोरियल डे यह दिन दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान मारे गए छह मिलियन यहूदियों की स्मृति में समर्पित है, जिसे 2005 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर घोषित किया गया। इस वर्ष होलोकॉस्ट मेमोरियल डे-2021 की थीम रही। बी द लाइट इन द डार्कनेस जिसके तहत आयोजित ऑनलाइन टॉक में विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों समेत ब्रह्माकुमारीज़ को भी विशेष आमंत्रित किया गया था। इसमें स्कॉटलैंड से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके एस्ट्रिड ने अपने विचार रखे। ऑनलाइन टॉक में आगे सिख धर्म से सुकी पूनी, हंगारियन मुस्लिम कम्युनिटी से मिरेला, उनिटारियन चर्च से कैरोलिन कॉरमैक ने भी अपने विचार रखे।

विभिन्न धर्मों में संवाद कार्यक्रम 'लव ऑफ नेबर'

■ शिव आमंत्रण । न्यूयॉर्क । विश्व इंटरफेथ हार्मनी वीक फरवरी के पहले सप्ताह के दौरान मनाया जाने वाला एक वार्षिक आयोजन है जिसे यूनाइटेड नेशन के तहत जनरल असेंबली द्वारा 2010 में संकल्पित किया गया था। इसके अंतर्गत इस वर्ष की थीम रही 'लव ऑफ गॉड एंड लव ऑफ नेबर'। इसी के तहत यूएन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ऑनलाइन इवेंट का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न संस्थाओं से कई दिग्गजों ने विषय के तहत मार्गदर्शन दिया, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ से वाशिंगटन डीसी की निदेशिका बीके डॉ. जेना, प्रख्यात लेखक बारबरा टेलर, पॉलिटिकल एक्टीविस्ट मैरियान विलीअमसम, बिशप कार्लटन पेअरसन शामिल थे। विभिन्न धर्मों के बीच संवाद की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए यह कार्यक्रम लोगों के बीच आपसी समझ, सौहार्द्र और सहयोग बढ़ाने के लिए, सद्भावना का संदेश फैलाने के लिए आयोजित किया गया था। जिसमें आगे लाइफ कोच डॉ फूजन जेन, इंटरनेशनल अकादमी फॉर मल्टीकल्चरल को-ऑपरेशन की प्रेसिडेंट ऑड्रे किटागावा एवं सोशल इम्पैक्ट एन्त्रेप्रेनुअर जय ने भी अपने विचार रखे।

जीवन में मूल्य ऐसे हों कि दुनिया ही स्वर्ग में बदले

■ शिव आमंत्रण । मास्को (रुस) । भारतीय मूल के लोगों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें इंडियन एम्बेसी की सत्या हेमराजानी, इंडियन कल्चरल सेंटर की प्रेसिडेंट दशा कोटवानी सहित 60 से भी अधिक लोग शामिल हुए। इस प्रोग्राम में चर्चा का विषय 'द हैबिट ऑफ सीइंग द गुड' था। जिस पर मॉस्को की निदेशिका बीके सुधा और सीनियर राजयोग टीचर बीके विजय ने अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर बीके सुधा ने कहा कि हम अपने जीवन में कोई लक्ष्य लेकर चलें। इस लक्ष्य से इतना अच्छा अपने आप को बनाना है, इतना वैल्यूज में अपने आप को ढाल देना है कि ये दुनिया स्वर्ग बन जाए। इस दुनिया में दुख का नाम न रहे, न कोई बीमार हो, न कोई गरीब हो, न कोई परेशान हो। ये सब खत्म हो जाए।

राजयोग मेडिटेशन से दूर हुआ अकेलापन: परमजीत

■ शिव आमंत्रण । बेवले (इग्लैंड) । लोग अकेलेपन से कैसे दूर हों इस पर खास जानकारी देने के लिए ओवरकमिंग लोनलीनेस विषय पर वेंबले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कई सालों से राजयोग का अभ्यास कर रहे बीके परमजीत ने उपरोक्त विषय पर गहराई से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अकेलापन महसूस करना यह एक फीलिंग है। मेडिटेशन करने के पहले यह मुझे समझ में नहीं आता था कि राजयोग कोर्स करने के बाद मुझे समझ में आया। राजयोग में अलग-अलग शक्तियों का अनुभव करने के बाद वह खत्म हो गई। राजयोग हमारे मन को शक्तिशाली बनाकर नकारात्मक विचारों को दूर कर देता है। साथ ही तनाव दूर होता है।

पुरी रिट्रीट सेंटर का 19वां स्थापना दिवस मनाया

सभा को संबोधित करते हुए बीके भगवान एवं उपस्थित श्रोतागण।

■ शिव आमंत्रण ▮ भुवनेश्वर (ओडिशा) ▮ नाथपुर के प्रभु उपवन सेवाकेंद्र में सकारात्मक जीवन शैली विषय पर प्रकाश कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारे वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके भगवान ने बताया कि सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मविश्वास से कुछ कर गुजरने का साहस पैदा होता है। इसी साहस से उत्पन्न बल से व्यक्ति कठिन से कठिन समस्या को सुलझा लेता है। वर्तमान समय जितनी भी समस्याएं हैं उन सबका कारण है नकारात्मक सोच। नकारात्मक सोच से तनाव बढ़ता है। तनावमुक्त बनने के लिए सकारात्मक विचार संजीवनी बूटी है।

बीके भगवान ने कहा कि सकारात्मक विचार से ही मुक्ति संभव है। जिस प्रकार एक बीमार न होने वाले व्यक्ति को पूरा स्वस्थ नहीं कहा जाता है, उसी प्रकार एक नकारात्मक सोच न रखने वाले व्यक्ति को सकारात्मक सोच वाला नहीं कहा जा सकता। सकारात्मक सोच रखने वाले लोगों की एक अलग ही पहचान होती है। तनाव से मुक्त होने सकारात्मक विचारों की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि मन में लगातार चलने वाले नकारात्मक विचारों से दिमाग में विभिन्न प्रकार के रासायनिक पदार्थ उतरकर शरीर में आ जाते हैं। इनसे अनेक बीमारियां होती हैं। मन के नकारात्मक विचारों से मनोबल, आत्मबल कमजोर बन जाता है। प्रभु उपवन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कल्पना, समाजसेवी जगनाथ स्वाई और बीके दुर्गा ने भी राजयोग का महत्व बताया।

सकारात्मक चिंतन से रह सकते हैं हमेशा स्वस्थ

■ शिव आमंत्रण ▮ गुरुग्राम ▮ गुरुग्राम सेक्टर 45 कम्युनिटी सेंटर में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में हरियाणा योग परिषद आयुष विभाग द्वारा 5 दिवसीय योग एवं ध्यान साधना शिविर का कार्यक्रम रखा गया। इसमें कई धार्मिक, आध्यात्मिक संगठनों के सहयोग से अलग-अलग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इसी के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ को भी आमंत्रित किया गया और उनको सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर बीके भावना ने राजयोग के अभ्यास और सकारात्मक चिंतन से कैसे शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थ रह सकते है उसके ऊपर सबको अवगत कराया। साथ ही राजयोग का भी अभ्यास कराया। स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जयंती ने संस्था का परिचय दिया। कार्यक्रम में बीके रंजीता भी उपस्थित थी। इसमें राज्य कार्यकारिणी सदस्य सज्जन सिंह यादव, पतंजलि के जिला प्रभारी रमेश जागलान सहित कई विशिष्ट नागरिकों का मुख्य योगदान रहा।

नए सेवाकेंद्र के निर्माण की रखी नींव

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जबलपुर के कटंगा कॉलोनी सेवाकेंद्र के तहत प्रेमनगर गुरुद्वारे के पास नवीन सेवा स्थान का हुआ भूमिपूजन

■ शिव आमंत्रण

बीके कमला, बीके हेमलता, बीके आशा व बीके विमला भूमिपूजन करते हुए।

जबलपुर (मप्र)। वर्तमान में मनुष्य सभ्यता के समक्ष अनेकों तरह की चुनौतियां चारों तरफ से आ रही हैं। चाहे वे प्राकृतिक प्रकोप या महामारियां हों, चाहे वो आपसी संबंधों में सामंजस्य की कमी के कारण आने वाले टकराव हों, चाहे वो आंतरिक मनोस्थिति में नकारात्मकता बढ़ने के कारण स्वंय में आत्मविश्वास की कमी हो, इन सब तरह के चुनौतियों के मध्य मनुष्य मात्र की आध्यात्मिक सेवा करके उनको सुख-शान्ति और आनंद से पूर्ण जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाने का कार्य इस सेवा स्थान के माध्यम से होगा। उक्त उद्गार इंदौर जोन की निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने व्यक्त किए। अवसर था ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कटंगा कॉलोनी शिव वरदान भवन के प्रेमनगर गुरुद्वारे के पास नए सेवाकेंद्र का भूमिपूजन का।

इंदौर जोन की क्षेत्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कहा कि इस स्थान पर जन सामान्य के आध्यात्मिक उन्नति के लिए आयोजन होंगे। यह स्थान सर्व को अपने जीवन में आध्यात्मिकता अपनाकर सुख शान्ति और पवित्रता से संपन्न जीवन जीने की प्रेरणा देने वाला बनेगा। ऐसी हमारी शुभ कामना है।

भिलाई से पधारीं ब्रह्माकुमारी आशा दीदी ने कहा कि जबलपुर नगर ने विश्व को अनेकों आध्यात्मिक विभूतियां प्रदान करी हैं। यह स्थान समस्त क्षेत्र के जन समुदाय को अपनी, अपने परिवार की और देश की आध्यात्मिक उन्नति करने में सहायक बनाएगा ऐसा मुझे विश्वास है।

मध्यप्रदेश में पहला सेवा केंद्र है जबलपुर

जबलपुर कटंगा कॉलोनी सेवा केंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी विमला दीदी ने कहा कि वर्ष 1950 के दशक में मध्यप्रदेश के अन्दर पहली सेवा आदरणीय ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी ने जबलपुर से ही आरम्भ की थी। जबलपुर नगर में समय-समय पर होने वाले कार्यक्रम के लिए बन रहा यह भवन जनसामान्य की आध्यात्मिक उन्नति में बहुत सहायक होगा। यहां के बाद प्रदेश के अन्य शहरों में सेवाकेंद्र की स्थापना की गई। संचालन ब्रह्माकुमारी बाला दीदी ने किया। स्वागत नृत्य कु. आरुधि ने प्रस्तुत किया।

'अन्न देती धरती माता को जहर न पिलाएं किसान'

कृषि मेले में उपस्थित अतिथि एवं उपस्थित श्रोतागण।

■ शिव आमंत्रण ▮ इगलास (उप्र) ▮ इगलास में कृषि मेले का आयोजन हुआ। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके हेमलता, हाथरस के आनंदपुरी कॉलोनी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शांता ने शाश्वत यौगिक खेती से सभी किसानों व उपस्थित अधिकारियों को अवगत कराया। इस मौके पर राजयोग शिक्षिका बीके शान्ता ने कहा कि भारत में गौ, सरस्वती, लक्ष्मी, धरती आदि को मां माना गया है जो जन्मदायिनी और पालनहारी होती हैं। बरसात के दिन हों या जेठमास की धूप, पौष महीने की ठण्ड हो, सभी ऋतु को सहन करने वाला किसान भी ऋषि की तरह ही अन्न उत्पादन के लिए साधना करता है। उसे अन्न देने वाली धरती माता को अपने अधिक उत्पादन के लालच के लिए रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों रूपी जहर नहीं पिलाने चाहिए। जिसे जैसा देंगे, वह वैसा ही वापिस करेगा। जैविक खाद एवं गोबर खाद, गोमूत्र तथा अन्य वनस्पतियों का उपयोग करने से न केवल जमीन बल्कि अन्न को ग्रहण करने वाले इंसान भी अनेक बीमारियों से बच सकते हैं। इस अवसर पर विधायक राजकुमार सहयोगी, जिला कृषि अधिकारी विनोद कुमार, अनुज झा मुख्य विकास अधिकारी तथा जिलाधिकारी इन्द्रभूषण, ब्रह्माकुमारीज के हरपाल नगर स्थित इगलास सेवा केन्द्र प्रभारी बीके हेमलता, बीके गजेन्द्र व किसान उपस्थित थे।

स्व स्थिति से प्राप्त होती है हर समस्या पर जीत

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

■ शिव आमंत्रण ▮ हाथरस (उप्र) ▮ गीता जयंती के उपलक्ष्य में आनन्दपुरी कॉलोनी सेवाकेन्द्र पर 'जीवन की समस्याओं का समाधान - गीता ज्ञान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन भारत गौरव संस्थान के अध्यक्ष कबाड़ी बाबा, डॉ. प्रदीप जिंदल, उद्योगपति अरविन्द अग्रवाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शान्ता ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस दौरान बीके शान्ता ने कहा कि शान्ति, प्रेम, आनन्द, पवित्रता और शक्ति यह आत्मा का स्वधर्म है। जिसमें स्थित होने से जीवन में शान्ति होती है। इससे स्वस्थिति प्राप्त होती है और उससे किसी भी समस्या पर जीत पा सकते हैं। बीके दिनेश ने बताया कि वास्तविक धर्मग्लानि का समय अभी है। वहां तो एक दुःशासन की बात है, लेकिन यहां हजारों, लाखों दुःशासन बने हुए हैं। यह सब बातें मन के क्षेत्र पर निर्माण होती है और बाहर असर दिखाती है। इसलिए श्रेष्ठ विचार देकर मन को इन विकारों से मुक्त कर विश्व को नई दिशा देने के लिए परमात्मा शिव अवतरित होने का यही समय है। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि मनुष्य मन में चल रहे युद्ध की जगह गीता में स्थूल युद्ध दिखाया है। कबाड़ी बाबा ने कहा कि जिसकी सोच महान है वही महान है।

राजयोग का संदेश — जबलपुर में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम आयोजित

राजयोग मेडिटेशन है व्यसनमुक्ति का सशक्त माध्यम

■ शिव आमंत्रण जबलपुर (मप्र) ▮ नेपियर टाऊन सेवाकेंद्र एवं नशामुक्ति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में व्यसनमुक्ति जागरूक अभियान का आयोजन भंवरताल पार्क में किया गया, जहां जनसमुदाय को नशे से होने वाले नुकसान बताए गए। इस दौरान बीके वर्षा ने नशे से प्रभावित लोगों को बताया कि व्यसन हमारे जीवन के लिए जहर है। इसे छोड़ने में राजयोग एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि राजयोग की विधि हमें सीधे ईश्वर से जोड़ती है। इससे हमें बुराइयों से छुटकारा पाने की शक्ति मिलती है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना ने भी राजयोग के लाभ से सभी को अवगत कराया।

यूथ फॉर ग्लोबल पीस शांति यात्रा निकाली, युवाओं को किया जागरूक

रैली में शामिल भाई-बहनें और युवाओं को शपथ दिलाते बीके भाई-बहनें।

■ शिव आमंत्रण ▮ माउंट आबू ▮ राष्ट्रीय युवा दिवस पर माउंट आबू के ज्ञान सरोवर परिसर में यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट के अंतर्गत पीस मार्च निकाला गया। इसका शुभारंभ ज्ञान सरोवर एकेडमी की निदेशिका बीके डॉ. निर्मला, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके सूरज, युवा प्रभाग के प्लैनिंग कमेटी के मेंबर बीके जीतू, बीके वीरेंद्र समेत अन्य बीके सदस्यों की उपस्थिति में हरी झण्डी दिखाकर किया गया। इस मौके पर सभी ने वर्तमान समय युवाओं में बढ़ रही नकारात्मकता, हिंसात्मक और अशुद्ध वृत्ति के प्रति ध्यान खिंचवाया और इसे समाप्त करने में शांति यात्रा का मुख्य योगदान बताया। ज्ञान सरोवर के पीस कॉटेज से प्रारंभ हुई इस भव्य रैली का जानकी पार्क में समापन किया गया, जिसमें लगभग 150 युवाओं ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की।

यदि युवा शक्ति सकारात्मक हो तो निश्चित ही भारत बन जाएगा विश्व गुरु: बीके तापोशी

युवा दिवस पर नेहरु युवा केंद्र के तत्वावधान में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए बीके तापोशी, साथ में बीके विपिन व अन्य।

■ शिव आमंत्रण ▮ वाराणसी ▮ स्वामी विवेकानंद जयंती एवं राष्ट्रीय युवा दिवस पर नेहरू युवा केंद्र के तत्वावधान में वाराणसी के चोलापुर ब्लॉक स्थित ग्राम कादीपुर में राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव में युवाओं के लिए विशेष प्रेरणादायी संगोष्ठी के साथ शान्ति यात्रा का भी आयोजन हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा प्रायोजित ग्लोबल इनीसिएटिव 'यूथ फार ग्लोबल पीस' के अंतर्गत वैश्विक स्तर पर चलाए जा रहे इस कार्यक्रम में काफी संख्या में युवाओं की उपस्थिति रही।

युवाओं को संबोधित करते हुए बीके बिपिन ने कहा कि हमें युवाओं को सही दिशा देने की जरूरत है जिससे वह जाति, धर्म, भाषा एवं अनेक भेदों से ऊपर उठकर अपनी उर्जा को राष्ट्र और विश्व के नव निर्माण की दिशा में सदुपयोग कर सकें।

बीके तापोशी ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा देश और विश्व का भाग्य विधाता है। युवाओं में निहित शक्ति और सामर्थ्य सकारात्मक हो तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। बीके निशा एवं बीके पूनम ने भी प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए और युवाओं को शान्ति दूत बनने हेतु संकल्पित कराया।

नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा अधिकारी निखिल ने युवाओं को सकारात्मक परिवर्तन द्वारा समाज परिवर्तन के लिए प्रेरित किया। नमामि गंगे की जिला परियोजना अधिकारी ऐश्वर्या मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में चोलापुर ब्लाक से 10 गांव के युवा मंडल सदस्य शामिल रहे। कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना के साथ स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण करके किया गया। अंत में 4 गांव के युवा मंडलों को खेल सामग्री वितरण किया गया और साथ ही स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस के अवसर पर युवाओं को शान्ति दूत बनने, श्रेष्ठ कर्म कर सकारात्मक सोच रखने और जल एवं पर्यावरण की सुरक्षा की शपथ भी दिलाई गई।

संचालन आराजी लाइन के डॉ. नंदकिशोर ने किया। राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक चिराग यादव एवं कुमारी पूजा भास्कर के संयोजन में उक्त कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था की ओर से बीके गंगाधर, बीके अशोक, बीके सूरज, बीके रोहित आदि की स'ीय भूमिका रही।

संयम और नियम का पालन हो तो कोई भी परिस्थिति को नियंत्रण करना संभव: ठाकरे

32वें सड़क सुरक्षा कार्यक्रम में सभा को संबोधित करते मुख्यमंत्री उध्दव ठाकरे।

■ शिव आमंत्रण

मुंबई ▮ महाराष्ट्र स्टेट रोड सेफ्टी काउंसिल और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट द्वारा 32वें सड़क सुरक्षा महीने के अंतर्गत मलबार हिल्स स्थित सह्याद्री गेस्ट हाउस में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि यदि संयम और नियम का पालन किया जाए तो कोई भी स्थिति को नियंत्रित कर सकते है, क्योंकि यह अक्सर नियम और संयम दोनों का परिणाम है। परिवहन मंत्री अनिल परब ने कहा, कि इस साल के सड़क सुरक्षा अभियान का मकसद 'जीवन रक्षा' होगा। यातायात मंत्री अरविंद सावंत, विधायक मंगल प्रभात, यातायात विभाग के अतिरिक्त प्रमुख सचिव आशीष कुमार सिंह, डीजीपी हेमन्त नागराले, एडिशनल डीजीपी डॉ. भूषण कुमार उपाध्याय, ट्रांसपोर्ट कमिश्नर अविनाश ढाकणे समेत कई पदाधिकारीयों की उपस्थिति में किया।

इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज संस्थान को सुड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसमें बोरीवली सेवाकेंद्र द्वारा स्टॉल लगा कर सड़क सुरक्षा के उपाय बताए और संस्थान के यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देने के साथ लोगों को ईश्वरीय सौगात भी भेंट की। इसके अलावा आमंत्रित किए गए सेफ किड्स, टाटा स्ट्राइव, 3 एम साइंस इक्विपमेंट और हाइवे मैनर्स 5 एनजीओ ने सड़क सुरक्षा सेवाओं के लिए उपयोग किए जाने वाले अपने विभिन्न संसाधनों को भी प्रदर्शित किया। यह अभियान पहली बार 18 जनवरी से 17 फरवरी तक एक महीना चला।

जीवन में उन्नति के साथ मन की शांति भी बहुत जरूरी है: सांसद

■ शिव आमंत्रण ▮ रामपुर मनिहारन (उप्र)।▮ रामपुर मनिहारन सेवाकेंद्र पर राज्यसभा सांसद कांता कर्दम का आगमन हुआ। उन्होंने कहा कि आधुनिक युग में मनुष्य उन्नति प्राप्त करने के लिए बहुत भागदौड़ कर रहा है और इस भाग दौड़ में कई बार कुछ लोग डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। सभी को उन्नति करनी चाहिए लेकिन विकास के साथ-साथ मन की शांति का होना भी बहुत जरूरी है। उन्नति के पीछे हम शांति खो बैठते हैं। मन की शांति के लिए ईश्वर से लगाव होना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ में आकर हमें सुखद अनुभूति हुई है। किसी भी मनुष्य का किसी से, किसी भी तरह का भेदभाव नहीं होना चाहिए। क्योंकि उस ईश्वर ने कोई भेदभाव नहीं किया है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके संतोष ने कहा कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर के बन्दे हैं। सुख-दुख जीवन का हिस्सा हैं। सच्चे और अच्छे लोग वही होते हैं जो किसी भी परिस्थिति में उस ईश्वर को नहीं भूलते। ऐसे लोगों का जीवन सफल हो जाता है।

राज्यसभा सांसद कांता कर्दम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेंद्र प्रभारी बीके संतोष।

खुशी के बारे में सोचें, तनाव आपे ही जाएगा

■ शिव आमंत्रण ▮ माउंट आबू। संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा हरियाणा पुलिस के लिए सेल्फ एम्पॉवरमेंट पर 3 दिवसीय ऑनलाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसमें हेड कॉन्स्टेबल, ट्रेनीज और ट्रेनिंग सेंटर के स्टॉफ सहित 750 लोग शामिल हुए। संचालन मुख्यालय माउंट आबू से किया गया। जिसमें संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी बीके सूरज भाई, हैदराबाद के हिमायत नगर सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके अंजली, दिल्ली की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके कमला, प्रभाग के कार्यकारी सदस्य बीके संजीव ने प्रशिक्षण दिया। सुरक्षा सेवा प्रभाग के कार्यकारी सदस्य बीके संजीव ने कहा कि यदि हम टेंशन रूपी प्रसाद बांट रहे हैं तो खुशी कैसे आएगी? खुश रहना सीखें, तनावमुक्ति के लिए यह एक ही उपाय है। तनाव के बारे में न सोचें, खुशी के बारे में सोचें। वरिष्ठ राजयोगी बीके सूरज ने कहा, समस्या और कुछ नहीं, हमारे कमजोर विचार यानी निगेटिव माइंड की रचना है। हमसे जो विचार निकलते है उनकी तरंगे चारो ओर फैलती है। वह हमारे ब्रेन में भी जाती है, शरीर में भी फैलती है।

वेबीनार में संबोधित करते बीके सूरज भाई व अन्य अतिथि।

व्यर्थ को लगाएंगे फुलस्टॉप तो बनेंगे शक्तिशाली

■ शिव आमंत्रण ▮ पुणे। नेशनल यूथ डे के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग और पुणे के जगदंबा भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर द्वारा यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट की ग्रैंड ऑनलाइन लॉचिंग की गई। इसका उद्देश्य वर्तमान चुनौतियों में युवाओं को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाना है।

इस दौरान जगदंबा भवन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुनंदा, महाराष्ट्र में युवा प्रभाग की जोनल कॉर्डिनेटर बीके शोभा, राजयोग शिक्षिका बीके श्रेया ने युवाओं से सकारात्मक विचार व आध्यात्मिकता के बल पर स्वयं को सक्षम व समर्थ बनाने का आहवान किया। बीके शोभा ने कहा कि युवा में अपना योगदान कर पूरे विश्व में शान्ति स्थापित करने की क्षमता है। बीके श्रेया ने कहा, व्यर्थ को फुलस्टॉप लगाने का प्रयास करेंगे तो शक्तिशाली बनेंगे। लेकिन व्यर्थ की जब बात आती है तो फिर फुलस्टॉप नही लगती। हमारे जीवन में अचानक बात आती है। लेकिन उस अचानक में ब्रेक तभी लगा सकते हैं जब लंबे समय का अनुभव होता है। इन विचारों को पॉजीटिव बनाने के लिए जरूरी है कि रोज हम कुछ अच्छा सुनें। इंडियन चेस प्लेयर एण्ड ग्रैंडमास्टर अक्षयराज कोरे ने कहा कि आप सभी राजयोग सीखें, इसका जीवन में अच्छा लाभ मिलेगा। ब्रह्माकुमारीज यह एक बहुत अच्छी संस्था है। कहां पे क्या इस्तेमाल करना है यह डिसाइड करो।

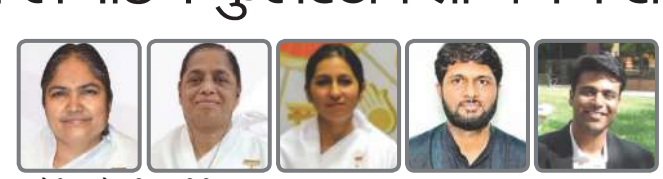

वेबीनार में शामिल अतिथि।

संगोष्ठी जयपुर में सर्वधर्म संगोष्ठी आयोजित, सभी धर्मगुरुओं के लिए बनाया अध्यक्ष मंडल

सभी धर्म मनुष्यों को आपस में जोड़ते हैं

शिव आमंत्रण

जयपुर । जयपुर में देश में प्रेम एवं सौहार्द्र के वातावरण को सुदृढ़ करने में धर्मगुरुओं की भूमिका पर सर्वधर्म संगोष्ठी का इंडियाना ग्रैंड होटल में आयोजन किया गया। इसमें धर्मगुरुओं ने कहा कि हम केवल अपने लिए नहीं बल्कि परमार्थ के लिए जीएं। धर्म सभी मनुष्यों को आपस में जोड़ता है। उन्होंने कहा कि आज यहां सभी धर्मों के आचार्य एक मंच पर उपस्थित हैं और यही असली भारत है।

इस दौरान धार्मिक जन मोर्चा की राजस्थान इकाई का भी गठन किया गया। सभी धर्मगुरुओं के लिए अध्यक्ष मंडल बनाया गया। इसके लिए आगामी दिनों में कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जाएगी। सभी के अधिकारों का सम्मान धर्मगुरूओं ने तय किया कि अब से सभी आपस में मिलकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करेंगे ताकि समाज में अच्छा संदेश जाए। इस मौके पर जमाअते इस्लामी हिंद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. मो. सलीम इंजीनियर ने कहा कि सभी के अधिकारों का सम्मान होना चाहिए। गलता तीर्थ के महंत अवधेशाचार्य ने कहा कि परस्पर आशंकाओं के कारण घृणा बनती है। मो. जाकिर नौमानी ने कहा कि समाज में प्रेम और सौहार्द्र बढ़ाने में धर्मगुरुओं की भूमिका अहम है। जयपुर डायसिस के बिशप ओसवल्ड लुइस ने कहा कि हमें समाज को समझाना होगा कि हम सभी ईश्वर की संतान हैं। इस मौके पर उपस्थित सोडाला सेवाकेंद्र प्रभारी बीके स्नेह ने वैश्विक सद्भाव पर अपने विचार रखे। साथ ही संक्षिप्त में जानकारी दी कि ब्रह्माकुमारी संगठन किस तरह लोगों को सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य कर रहा है और उनके जीवन में खुशियां ला रहा है। इसके बाद बीके श्याम सुंदर ने कहा कि यदि आप पवित्र हैं, शुद्ध हैं तो आपको कोई भी परेशान नहीं कर सकता है। साथ ही गुरूद्वारा जवाहरनगर के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरदीप सिंह समेत अनेक धर्मगुरुओं ने अपना वक्तव्य दिया।

सभा को संबोधित करते धर्म गुरू।

शाश्वत यौगिक-जैविक खेती पद्धति से हम कम खर्च में अधिक उत्पादन ले सकते हैं

खेती पर योग के वायब्रेशन फैलाते हुए बीके भाई-बहनें।

■ शिव आमंत्रण । **कादमा (हरियाणा)** । कादमा सेवाकेंद्र द्वारा कान्हड़ा गांव में शाश्वत यौगिक खेती का आधार राजयोग विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वसुधा ने कहा कि कम खर्च मे अधिक फसल देनेवाली गुणवत्तायुक्त खेती का नाम है शाश्वत यौगिक खेती। जैविक खाद का प्रयोग करते हुए राजयोग मेडिटेशन का प्रयोग फसल पर कर अपने तन-मन को स्वस्थ बनाकर इस खेती से भारत देश को सुखी व समृद्ध बना सकते हैं। वसुधा ने कहा कि यदि किसान यौगिक खेती को अपनाएं तो योग द्वारा अविनाशी प्रकाशमय परमात्मा के पवित्र प्रकंपन से फसलों की उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता अवश्य ही बढ़ेगी। बीके ज्योति बहन ने कहा कि हमारे संकल्पों का बहुत महत्व है जैसे संकल्प होंगे वैसी ही सृष्टि होगी। हमारे संकल्पों का प्रभाव प्रकृति और पांचों तत्वों पर पड़ता है इसलिए खेती में राजयोग का प्रयोग कर हम अपने गांव समाज को स्वस्थ सुखी स्वच्छ बना सकते हैं। बीके भाई बहनों ने राजयोग से फसलों पर पवित्र श्रेष्ठ संकल्पों के वायब्रेशन फैलाए।

पद्मविभूषित सांसद सुमित्रा महाजन का किया सम्मान

सुमित्रा महाजन का सम्मान करते हुए बीके भाई-बहने।

■ शिव आमंत्रण । **इंदौर** । पूर्व लोकसभा स्पीकर एवं सांसद सुमित्रा महाजन को भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ज़ोन प्रभारी बीके आरती की तरफ से मीडिया प्रभाग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके दुर्गा, बीके प्रमिला ने पुष्पगुच्छों से उनका स्वागत व सम्मान किया। साथ ही वर्तमान में चल रही संस्था की गतिविधियों की जानकारी देते हुए ईश्वरीय संदेश दिया। बीके नारायण व बीके राकेश भी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण के सलाहकार संपादक प्रो. कमल दीक्षित का देहावसान

■ शिव आमंत्रण । **भोपाल (मप्र)** । शिव आमंत्रण समाचार पत्र के सलाहकार संपादक प्रो. कमल दीक्षित का भोपाल में 10 मार्च 2021 को देहावसान हो गया। आपने मीडिया में छह से अधिक दशक तक सक्रिय भूमिका निभाई। राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यनिष्ठ मीडिया के लिए आपके द्वारा किए गए प्रयासों, पत्रकारों के सकारात्मक परिवर्तन और सरोकारी पत्रकारिता के लिए आपको हमेशा याद किया जाएगा। बता दें कि प्रो. दीक्षित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष भी रहे हैं। साथ ही आपने पत्रिका, नवभारत, नईदुनिया जैसे राष्ट्रीय समाचार पत्रों में संपादक के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। इसके अलावा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रभाग के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड, शांतिवन से निकलने वाली मासिक पत्रिका राजी-खुशी के आप संपादक भी थे। मीडिया में आध्यात्मिक और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए आपने मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति की स्थापना की थी। इसके माध्यम से आप देशभर में पत्रकारों के शिक्षण, प्रशिक्षण और मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए सभा, संगोष्ठी और सेमीनार का आयोजन समय-समय पर करते रहते थे।

प्रो. कमल दीक्षित।

रैली से दिया संदेश: आध्यात्मिकता से ही समाज को मिलेगी नई दिशा

भवन के उद्घाटन अवसर पर निकाली गई रैली।

■ शिव आमंत्रण । **मधेपुरा (बिहार)** । मधेपुरा में नवनिर्मित सुख शांति भवन का उद्घाटन एवं स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर राजविराज क्षेत्र की मुख्य संचालिका बीके भगवती ने कहा एक आदर्श समाज में नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्य प्रचलित होते हैं। नैतिक मूल्यों का हमें सम्मान करना चाहिए। मूल्य शिक्षा द्वारा ही बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। नवनिर्मित सुख-शांति भवन में देने वाली शिक्षाओं से मानव जीवन में कार्यकुशलता, व्यावसायिक दक्षता, बौद्धिक विकास एवं विभिन्न विषयों के साथ आपसी स्नेह, सत्यता,पवित्रता, अहिंसा, करुणा, दया इत्यादि मानवीय मूल्यों का पाठ सभी को पढ़ाया जाएगा। इस बात को विधायक प्रो. चंद्रशेखर यादव ने काफी सराहा और साथ ही अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान समय में समाज के नर-नारी एवं युवाओं को आध्यात्मिकता द्वारा ही नई दिशा मिलेगी। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रंजू ने संस्थान द्वारा दिए जा रहे नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा की जानकारी दी।

जीवनशैली सीआएएसएफ जवानों से बीके शशिकला की सलाह...

'भगवान का कार्य है' भाव रखो तो तनाव मुक्त रहेंगे

सभा के दौरान उपस्थित सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स के जवान। इनसेटः संबोधित करते हुए बीके शशिकला व अन्य।

■ शिव आमंत्रण

विशाखापट्नम । सालीग्रामपुरम के सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्सेस कैंपस में आध्यात्मिकता के माध्यम से तनाव पर काबू पाने के लिए विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें न्यू रेलवे कॉलोनी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शशिकला मुख्य रूप से आमंत्रित हुई।

इस दौरान बीके शशिकला ने जीवन में तनाव को दूर करने के लिए कई सरल युक्तियां बताईं और एक खुशहाल व शांतिपूर्ण जीवनशैली का नेतृत्व करने के लिए कुछ तरीकों को परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि भगवान को विश्वरक्षक कहते हैं वैसे आप भी भगवान का ही कार्य कर रहे हैं, इसलिए

अभिनंदन के पात्र हो। समझो आप को कई बार अपनी सेवा देते हुए या और कई कारण से तनाव आता है तो यह भगवान का कार्य है और हम निमित्त हैं यह भाव रखते जाएंगे तो आपकी पूरी सुरक्षा और सृजन का कार्य खुद भगवान करने के लिए बंधायमान है।

जवानों को ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कामेंट्री द्वारा कराया गया। साथ ही सभी से राजयोग सीखने की अपील की। जीवन में आध्यात्म हमें कर्म कुशलता सिखाता है।

सभी जवान अपने काम के प्रति समर्पण और सम्मान को कैसे बढ़ाएं, मूल्यों को जागृत कैसे करें इस पर अन्य सदस्यों ने अपने विचार रखे। इंस्पेक्टर संजय ने बहनों का आभार माना। असिस्टेंट कमाण्डेंट आरआर झा ने राजयोग का लाभ लेने की बात कही।

कर्मों की गुह्य गति को समझकर जीवन में सदा श्रेष्ठ कर्म करते रहें

सम्मानित परिवारों के साथ बीके कल्पना।

■ शिव आमंत्रण । **भुवनेश्वर (ओडिशा)** । नाथपुर के प्रभु उपवन में आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें जिला परिषद सदस्य ज्योशना माई सुंदरी, समाज सेवक कुंजबिहारी स्वाइन, इंदिरा हाउसिंग कॉलोनी की प्रभारी बीके कल्पना, बीके मिनी और बीके रमनीकांत समेत अन्य अतिथि उपस्थित रहे। इस दौरान बीके कल्पना ने लोगों को परमात्मा का सत्य परिचय देने के साथ कर्मों की गुह्य गति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि जीवन में सदा श्रेष्ठ कर्म करते रहें। अंत में सभी विशिष्ट लोगों को बहनों द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। इस मौके पर बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

महाशिवरात्रि शांतिवन में पांच दिवसीय शिवरात्रि महोत्सव मेले का आयोजन

पांच बुराइयों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देगा यह आध्यात्मिक मेला:दादी रतनमोहिनी

शिवरात्रि आध्यात्मिक मेला का झंडा फहराकर उद्घाटन करतीं दादियां एवं अन्य।

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम के ग्राउंड में शिवरात्रि महोत्सव के तहत पांच दिवसीय मेले का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि सबको परमात्मा शिव बाबा की याद में अपनी बुराइयों को समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए। परमात्मा एक ही है दो नहीं, जिसे सत्यम शिवम सुन्दरम के भी नाम जानते हैं। वे आध्यात्मिक मेले में आये लोगों को संबोधित कर रही थी।

उन्होंने कहा कि परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर हम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। उनसे पढ़ाई पढ़कर हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने अंदर छिपी बुराईयों को परमात्मा पर अर्पण कर सदगुणों को धारण करें।

बतौर मुख्यातिथि आए आबू रोड नगर पालिका के अध्यक्ष मगनदान चारण ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से लोगों में आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान समाज में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। हम सभी को मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ाने में मददगार बनना चाहिए। परमात्मा शिव दयालु हैं वे हम सभी की बुराइयों को समाप्त करने में शक्ति प्रदान करेंगे।

आबू रोड के तहसीलदार रामस्वरूप जौहर ने कहा कि दादियों और बाबा के पुण्य से यह संस्थान दिनोंदिन बढ़ रहा है। इसकी महक पूरे विश्व में जा रही है। कार्यक्रम में भूमि नगर सुधार न्यास के पूर्व अध्यक्ष हरीश चौधरी ने कहा कि मेरा जीवन इस संस्थान के छांव में बड़ा हुआ है। हमेशा हमें शिवबाबा का आशीर्वाद मिलता रहा है। लोगों को इससे जुड़कर अपना जीवन उच्च बनाना चाहिए। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा ने कहा कि 1960 में डिजाइन इंजीनियर के रूप में हमें परमात्मा का सत्य ज्ञान जानने को मिला। बीस वर्ष की उम्र में ही संस्थान में आ गया और तबसे लेकर आज तक बाबा की सेवा में कार्य कर रहा हूं।

सिरोही जालोर के पर्यटन के निदेशक बीएस चौहान ने कहा कि शिवरात्रि का पर्व अज्ञान अंधकार से निकाल कर ज्ञान की रोशनी में ले जाने वाला है। इसलिए हमें इस पर्व को आध्यात्मिक व्याख्या के साथ मनाना चाहिए। बीएस मेमोरियल स्कूल के चेयरमैन प्रमोद चौधरी ने भी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तलहटी जैसे स्थान से पूरे विश्व में ज्ञान का प्रचार प्रसार हो रहा है। यह गौरव की बात है। कार्यक्रम में ईशु दादी, बीके जगदीश ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री ने नए राजयोग सेवाकेंद्र का किया शुभारंभ

कार्यक्रम का उद्घाटन करते सीएम नीतीश कुमार व मंत्री चौधरी।

■ शिव आमंत्रण । **पटना/बिहार** । बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय (शेखपुरा शाखा, पटना) में महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में नवनिर्मित लाइट हाउस सेवाकेंद्र का उद्घाटन किया। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित कर शिव बाबा को नमन किया। इस अवसर पर उन्होंने चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

नवनिर्मित लाइट हाऊस सेवाकेंद्र का मुख्यमंत्री ने उद्घाटन कर समाजसेवा के लिए समर्पित किया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी संगीता दीदी ने सहज राजयोग एवं आध्यात्मिक जीवन पद्धति पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रहीं सेवाओं की सराहना की। बहनों द्वारा मुख्यमंत्री का स्वागत किया। इस दौरान भवन निर्माण मंत्री डॉ. अशोक चौधरी, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, डीएम डॉ. चंद्रशेखर सिंह, एसएसपी उपेंद्र शर्मा, राजयोगी ब्रह्माकुमार डॉ. बनारसीलाल शाह, राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रुक्मिणी दीदी सहित बीके भाई-बहन व गणमान्य लोग मौजूद थे।

समाज के हर वर्ग को ऊंचा उठाने का महान कार्य कर रही है ब्रह्माकुमारीज़

■ शिव आमंत्रण । **पठानकोट (पंजाब)** । पठानकोट में भी युवा प्रभाग द्वारा यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट का शुभारंभ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सत्या की अध्यक्षता में अकाली दल बादल के पंजाब प्रदेश के उपाध्यक्ष सरदार हरदीप सिंह लमिनी द्वारा किया गया। इस दौरान हरदीप सिंह ने संस्था की सराहना करते हुए कहा कि ये संस्था समाज को जमीनी स्तर से समाज के हर वर्ग को ऊंचा उठाने का महान कार्य कर रही है। बीके सत्या ने कहा युवा छोटे बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत है। बुजुर्गों के लिए सहारा है, देश की नींव है। यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट युवाओं में रचनात्मकता को बढ़ाकर एवं सशक्त बनाकर, उन्हें विश्व शांति के लिए प्रेरित कर रहा है। उपाध्यक्ष हरदीप सिंह ने संस्था की सराहना करते हुए कहा कि संस्था जमीनी स्तर से समाज के हर वर्ग को ऊंचा उठाने का महान कार्य कर रही है। इस अवसर पर बीके प्रताप, बीके गीतांजलि, ओमप्रकाश, स्वतंत्र प्रभा, नीलम, विशाल, सचिन सहित अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद थे। इस प्रोजेक्ट के तहत पीस वॉक, पोस्टर प्रतियोगिता, गिफ्ट ऑफ गुड विशेस समेत कई प्रतियोगिताएं कराई गई जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी निभाई।

लोगों को ईंधन संरक्षण के लिए कराई प्रतिज्ञा

■ शिव आमंत्रण । **सोलापुर** । ग्रीन एंड क्लीन एनर्जी के प्रति जागरूकता को लेकर महाराष्ट्र के सोलापुर सेवाकेंद्र पर ईंधन संरक्षण ग्रह ऊर्जा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम ब्रह्माकुमारीज़ सोलापुर और पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संघ के सहयोग से आयोजित किया था। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर उप जिलाधिकारी अनील करांडे, कार्पोरेटर संगीता जाधव शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पीसीआरए के फैकल्टी मेम्बर बीके केदार ने लोगों को इंधन संरक्षण की दिशा में कार्य करने के कई सुझाव दिए तो सोलापुर सबज़ोन प्रभारी बीके सोमप्रभा ने सभी ईंधन संरक्षण के लिए प्रतिज्ञा कराई।

सभा को संबोधित करते हुए बीके केदार।

सेमीनार वैश्विक शांति के लिए जलवायु परिवर्तन वेबीनार का आयोजन

जलवायु परिवर्तन के लिए पेश किया विकास का नया मॉडल

जलवायु परिवर्तन वेबीनार में शामिल अतिथि।

■ शिव आमंत्रण

अंबिकापुर (उप्र) । वर्तमान समय आतंकवाद से भी ज्यादा गंभीर समस्या जलवायु परिवर्तन की है। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए वृक्षपति ओपी अग्रवाल ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक मॉडल प्रस्तुत किया। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वीडियो मैसेज के अग्रवाल ने इसकी जानकारी दी।

वृक्षमित्र ओपी अग्रवाल ने कहा कि 2 एकड़ से कम जमीन के लिए इस मॉडल का निर्माण किया गया हैं। जिसमें एक तालाब, विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, खेती, वनस्पति एवं मछलियों का भी उत्पादन किया जाता हैं। ऐसा मॉडल देश-विदेश में होना चाहिये, जिससे देश का विकास बहुत ही तेजी से होगा।

जलवायु परिवर्तन स्वच्छ बनाने के लिए आध्यात्मिकता अपनाने का संकल्प

कृषि एग्जीक्यूटिवएवंब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग के राजेश देव ने कहा कि वर्तमान समय मे विश्वभर की सबसे बड़ी समस्या जलवायु परिवर्तन हैं। इस समस्या से भारत के किसानों को बचाने के लिये, उनकी आजीविका ठीक बनी रहे इसके लिएहमें जलवायु परिवर्तन को रोकने की ठीक तरह से सामना करने की, परीक्षण को एवं जागरूकता को लेकर पूरे देश को तैयार होना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिएब्रह्माकुमारी द्वारा सिखाये जा रहे यौगिक खेती के विधियों को जानने से इस समस्या का निदान संभव है।

पूर्व कुलपति रोहिणी प्रसाद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए ओपी अग्रवाल द्वारा बनाया गया यह एक ऐसा मॉडल है जो देश, समाज और लोगों के लिए कार्यरत सिद्ध होगा।

ऐसे ही गांव में भी यदि 1 एकड़ से भी कम जमीन है तो झील और पेड़-पौधों आदि के माध्यम से खेती भी कर सकते हैं और पूरे सालभर के लिए खर्च भी निकाल सकते हैं। यह मॉडल आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक पाठ बन सकता हैं। फिल्म निर्माता एवं अभिनेता आनन्द कुमार गुप्त ने कहा कि जलवायु परिवर्तन को रोकने लिएसबसे ज्यादा जरूरत हैं लोगों में जागरूकता लाने की। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा या सिनेमा द्वारा इस अभियान को जन- जन तक पहुँचाया जा सकता है। सरगुजा संभाग की प्रभारी बीके विद्या ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

योग की शक्ति हमारे विचारों में है अपना भाग्य बदलने की शक्ति, जैसे विचार, वैसा जीवन

यह सदा याद रखें मैं मास्टर भाग्यविधाता हूं

पिछले अंक से क्रमशः

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

यदि कभी ऐसा लगे कि बहुत मेहनत करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है। शायद भाग्य हमसे रूठ गया है तो स्वयं को याद दिलाएं मैं मास्टर भाग्य विधाता हूं। बिगड़ा हुआ भाग्य सुधर जाएगा।

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । यदि मैं अपने अनुभवों की बात आपको कहूं। 1971 में पहली बार अव्यक्त मुरली में मैंने सुना कि बाबा ने याद दिलाया कि तुम भक्ति में कहते थे हे! भगवान जब तुम इस धरा पर आओ तो हमें अपना बना लेना। बाबा ने कहा कि इतना ही कहते थे न तुम बस। हमने तो कभी कहा भी नहीं था, क्योंकि हमने कभी भक्ति की नहीं थी। कहते होंगे भी भक्त लोग ऐसे। बाबा ने कहा देखो बाप ने क्या कर दिया। जो तुमने कहा था वह तो पूरा कर ही दिया कि मैंने तुम्हें अपना बना लिया। इसके साथ-साथ मैं भी तुम्हारा हो गया हूं। तो वह पहला दिन था मेरे जीवन का जब मुझे ये नशा मुझे चढ़ा कि भगवान मेरा। ये तो किसी को कहना भी नहीं आता दुनिया में कितनी बड़ी चीज है। जो भाग्यविधाता है, वह मेरा है। आप सबने सुना होगा बाबा की मुरली में यदि कभी किसी को ऐसा लगे कि मेरा भाग्य मुझे साथ नहीं दे रहा है तो ये याद करें कि स्वयं भाग्यविधाता भगवान मेरा है। भाग्य साथ देने लगेगा।

यदि कभी ऐसा लगे कि बहुत मेहनत करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है। शायद भाग्य हमसे रूठ गया है तो स्वयं को याद दिलाएं मैं मास्टर भाग्य विधाता हूं। बिगड़ा हुआ भाग्य सुधर जाएगा। भगवान मेरा है ये प्यार और उस पर अधिकार रखना ये बहुत सुन्दर तरीका है, योगयुक्त रहने का।

ये इतना अधिकार हो जाए हमारा, बाबा मेरा है, इस अधिकार से उसको हम अपने पास बुलाएं और वह आ जायेगा। उसकी उपस्थिति को महसूस करें।

मैंने बहुत माताओं को भी ये बात सिखाई है कि अपने घर में बाबा को कम से कम तीन बार घर में जब बाबा को भोग लगाएं तो बापदादा को ऊपर से नीचे बुलाएं, आपको महसूस होने लगेगा कि बाबा आ जाता है। जहां बाबा आ होता है, वहां चारों ओर वायब्रेशन फैलने लगते हैं तो बाबा के साथ का अनुभव होने लगेगा, ये है बहुत सिम्पल तरीका।

अब दूसरी चीज वैसे तो हम सिम्पल भाषा में योग की अवस्थाओं को निराकारी, आकारी, अव्यक्त, फरिश्ता, बीजरूप, ज्वालारूप, पावरफुल योग ये शब्द प्रयोग करते हैं। सबसे पहले हमें जो अशरीरी होने का अभ्यास करना होता है। मैं आपको केवल एक टेक्नीक बताऊं जो बहुत सिम्पल है। इसे ब्रह्मा बाबा अपनी साधनाओं में बहुत किया करते थे। अंतिम साल में तो बाबा ने इस साधना को बहुत किया था। मैं आत्मा इस तन में आई हूं खेल पूरा हुआ, अब ये शरीर छोड़कर वापिस जाना है। आना और जाना ये फीलिंग हमें देह से न्यारा कर देती है। योग अभ्यास में जो भाई और बहनें वेल एजुकेटेड हैं। अच्छे-पढ़े लिखे हैं। वह इस बात को जरा ध्यान देंगे। ये अभ्यास में विजुलाइजेशन का बहुत बड़ा महत्व है। बुद्धि के नेत्र से बाबा के स्वरूप को अपने भिन्न-भिन्न स्वरूपों को विजुलाइज करें। देखें इसका बहुत महत्व है। इससे भी इम्पारटेंट बात है जिस चीज को हम विजुलाइज करेंगे। जिस चीज को हम देखेंगे। जिस अब्जेक्ट पर हम अपनी बुद्धि को स्थिर करेंगे। उसकी एनर्जी, उसकी शक्ति उसके वायब्रेशन हमारे अंदर आने लगेंगे। ये एक टेक्निक है जिससे हम समझ सकते हैं कि योग अभ्यास में बाबा से शक्तियां, शांति, प्योरिटी कैसे प्राप्त होती है। हम मांगते नहीं हैं कि हमें शांति दो, शक्ति दो, सद्बुद्धि दो। हम मांग नहीं रहे हैं, हम उसके स्वरूप पर अपनी बुद्धि स्थिर कर रहे हैं, तो जो कुछ उसमें हैं ओ हममें आने लगता है।

धर्म-ग्रंथों से मानव आत्मा चौरासी लाख योनियों से नहीं गुजरती है

सृष्टि चक्र में मनुष्य आत्मा लेती है 84 जन्म

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

■ शिव आमंत्रण

सारा चक्र ही पाँच हजार साल का है तो पाँच हजार साल के अन्दर अगर चौरासी लाख जन्म लेने हों तो हर जन्म की आयु कितनी होगी?

आबू रोड । कर्मों के साथ हमारे पिछले जन्मों का बहुत गहरा सम्बन्ध है। शास्त्रों में कहा है कि लख चौरासी योनियों से मनुष्य को गुजरना पड़ता है। अब लख के तीन अर्थ है:-लख का पहला अर्थ है 'लाख', (संख्यावाचक) लख का दूसरा अर्थ है 'देखना', और लख का तीसरा अर्थ है 'लक्ष्य'।

शास्त्रों वादियों ने 'लख' का अर्थ चौरासी लाख कर दिया और कह दिया कि चौरासी लाख योनियों से आत्मा को गुजरना पड़ता है और जैसे कर्म करेंगे वैसी योनि प्राप्त होगी। ताकि मनुष्य इस डर से कोई गलत कर्म ही न करे और चौरासी लाख जन्मों का कोई हिसाब देने की जरूरत नहीं।

वास्तव में ईश्वरीय आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि 'लख' का अर्थ है देखना अर्थात् अपने चौरासी जन्मों को देखो भावार्थ अपने चौरासी जन्म की कहानी को लक्ष्य देकर यानी ध्यान देकर समझो और कर्म करो। हो सकता है कि संसार में चौरासी लाख योनियां हो लेकिन उन योनियों से मानव आत्मा को गुजरना नहीं पड़ता है। इन बातों को तो हमने बहुत अच्छी तरह समझ लिया है। अब अगर मनुष्य मनुष्य योनी में ही जन्म लेता है तो कितने जन्म लेता है?

काल चक्र के अन्तर्गत हमने समझा था कि सारा चक्र ही पाँच हजार साल का है तो पाँच हजार साल के अन्दर अगर चौरासी लाख जन्म लेने हों तो हर जन्म की आयु कितनी होगी? इसका कोई हिसाब सही नहीं बैठता। इसलिए शास्त्रवादियों ने कह दिया कि एक-एक युग लाखों साल का है और ऐसे यह काल चक्र भी अरबों साल का दिखाकर कह दिया कि उसमें चौरासी लाख जन्म लेने होंगे।

मनुष्यात्मा सारी योनियों में घूम-घूम कर फिर मानव देह प्राप्त करेगी। ताकि किसी को इसका कोई हिसाब नहीं देना पड़ेगा। सिर्फ चौरासी जन्म कहने से तो उसका हिसाब सभी पूछेंगे जिसका उनके पास कोई जवाब नहीं। अब ईश्वरीय सत्ता इस गुह्य ज्ञान को स्पष्ट करती है कि मनुष्यात्मा चौरासी जन्म कैसे लेती है। तर्क की कसौटी पर यह सत्य सिद्ध हो जाता है।

वर्तमान समय में मनुष्य की औसत आयु लगभग 50-60 वर्ष की है। हमारे पूर्वजों की औसत आयु 70-80 साल की थी। उनके भी पूर्वजों का 90-100 साल औसत आयु थी। उससे पूर्व त्रेतायुग के देवताओं की आयु लगभग 125 वर्ष की होती थी और सतयुग के देवताओं की आयु 150 वर्ष के आस-पास होती थी। अब अगर यह सवाल किया जाए कि पहले के लोगों कि आयु इतनी अधिक और आज की लोगों की आयु इतनी कम क्यों? जबकि मेडिकल साइंस ने तकनीकी तरक्की की है, फिर भी कम आयु क्यों? तब यही महसूस होता है कि मनुष्य की आयु का सम्बन्ध मेडिकल साइंस या तकनीकी तरक्की से नहीं लेकिन उसकी मानसिकता से है।

पहले के समय में मनुष्यों की आत्मशक्ति या मनोबल बहुत अधिक था। आज के मनुष्यों का जीवन बहुत नाजुक हो गया है और उसमें आत्म-विश्वास की कमी हो गयी है। उसे जब भी कुछ होता है तो वे दर्द में कराहते उनके मुख से यही बोल निकलने लगते हैं कि इससे मर जाते तो ठीक था, मानो उनमें सहन शक्ति ही नहीं हैं। उसकी जीने की उम्मीद या हिम्मत टूट जाती है और दिल का दौरा पड़ जाता है इसलिए कभी भी अकाले मृत्यु हो जाती है।

पहले के जमाने के लोग दर्द में अपनी सहन शक्ति को इतना बढ़ा देते कि वे कर्मभोग के दर्द को हराकर पुनः एकदम स्वस्थ होकर जीने लगते थे। इसी प्रकार देवी-देवताओं की आयु इतनी थी क्योंकि उस वक्त उनकी आत्म-शक्ति सम्पूर्ण थी। वे अपनी पूरी आयु भोग कर स्व-इच्छा से, सहजता से एक शरीर रूपी वस्त्र उतार दूसरा शरीर रूपी वस्त्र धारण करते थे।

आगे का रहस्य... क्रमशः

अंतर्मन हमारा हर दिन, हर क्षण नया हो, उमंग हो

ईश्वरीय बचपन भुला न देना

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

■ शिव आमंत्रण

हम संसार को ऐसे देखें जैसे पहली बार देख रहे हैं। ड्रामा रिपीट होता है यह दूसरी बात है। जीवन में हर दिन सरप्राइज हो।

आबू रोड । ईश्वरीय पढ़ाई में पढ़ते चलते-चलते इस ब्राह्मण जीवन में कईयों ने इतना करवाहट देख ली कि न जाने कहां खो गया वो उमंग, उत्साह, खुशी, अतिइंद्रिय सुख, परमात्म प्रेम। तो फिर से लौट चलना है उसी ईश्वरीय बचपन में। मनुष्य जैसे ही आगे बढ़ते जाता है बड़ा होते जाता है, जीवन का रहस्य खो जाता है। क्योंकि हम सोचते हैं ये तो बस जीवन की सारी वही-वही बातें हैं। क्या फिर से एक छोटा सा बच्चा बना जा सकता है। जो देखें चीजों को अवाक हो जाएं, जो सुनें चीजों को उसको लगे कि वह अनसुना था। जो सोचें, समझें, हंसे जो प्रेम करें। ऐसा प्रेम जो कहीं बचपन में था और फिर जीवन की दौड़ में धीरे-धीरे कहीं खो गया। क्या वह बचपना फिर से आ सकता है।

हर दिन जब उठें तो लगे नया दिन

हम संसार को ऐसे देखें जैसे पहली बार देख रहे हैं। ड्रामा रिपीट होता है यह दूसरी बात है। परंतु जीवन में हर दिन सरप्राइज हो। हर दिन जब उठें तो लगे यह नया दिन है। हरेक चीज नया के साथ हरेक बातों में नवीनता उत्साह, उमंग और एक नया अनुभव हो। यह स्थान भी बदल रहा है, यह वो नहीं जो कल था। क्योंकि यहां के प्रकंपन आज बिल्कुल नए हैं। जब ऐसा अनुभव होने लगेगा तब बचपन फिर से लौट आयेगा।

विदेश की एक लेखिका ने 70 वर्ष की उम्र में एक सेंस ऑफ वंडर नाम की किताब लिखी, जिसमें लिखा है कि 70 वर्ष की आयु में मुझे लगा कि क्यों न हम बच्ची बन जाऊं। और उसने एक 5 वर्ष के बच्चे के साथ दोस्ती की। दो साल तक उस बच्चे के साथ रही। जैसे वह बच्चा करता वैसे ही वह भी करती थी। जैसे वह बच्चा भागता वह भी उसके साथ भागती। बच्चा समुंदर के तट पर मोती बीन चुगता वह भी वही करती।

सूरज चांद तारे को आश्चर्य से देखता वह भी ऐसा ही महसूस करती थी। लेखिका को लगा जैसे यह बच्चा करता है, वैसे ही मैं करुं और बचपन के दिन को महसूस कर तरोताजा हो जाऊं। उन्होंने अपना अनुभव लिखा कि ऐसा करके जो हमने महसूस किया वह आज तक कभी न किया। मुझे लगा फिर से मेरे जीवन में नवीनता आ गई जो खो गई थी। उसी बचपन में लौट जाना है।

संकल्प शक्ति का कमाल ▶ रक्षिता सोनी ने संकल्प शक्ति और राजयोग मेडिटेशन से जीती जिंदगी की जंग

योगा शिक्षिका ने बुलंद इरादों और मन की शक्ति से कैंसर को हराया

रियल लाइफ

रक्षिता सोनी
योगा, एरोबिक्स एवं डांस शिक्षिका, कोटा, राजस्थान

संकल्प शक्ति

ब्रह्माकुमारीज़ कोटा सेवाकेंद्र के भाई-बहनों ने भी योग से दिए शुभ बाइव्रेशन, जीती जिंदगी की जंग

■ शिव आमंत्रण ▮ (रामगंज मंडी) कोटा, राजस्थान ▮ राजस्थान के कोटा रामगंज मंडी निवासी योगा शिक्षिका ने अपने बुलंद इरादों से कैंसर को मात देकर नजीर पेश की है। ऑपरेशन के पहले डॉक्टर्स ने मरीज के बचने की एक फीसदी गुंजाइश बताई। यहां तक कि एनेस्थीसिया देने से मना कर दिया। उनका कहना था कि मरीज की हालत नाजुक है, ऐसे में हम रिस्क नहीं ले सकते हैं। लेकिन हॉस्पिटल के डायरेक्टर के हस्तक्षेप के बाद वह तैयार हुए। आज योगा शिक्षिका न केवल पूरी तरह से स्वस्थ हैं बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गई हैं।

शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में कोटा की योगा, एरोबिक्स एवं डांस शिक्षिका रक्षिता सोनी (43) ने उनके जीवन का परिवर्तनकारी अनुभव सांझा किया, उन्हीं के शब्दों में कैसे जीती जिंदगी की जंग-

मैं दस साल से ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर नियमित रूप से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हूं। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शीतल दीदी की प्रेरणा से मैंने बच्चों के लिए डांस, योगा, एरोबिक्स और एक्सरसाइज सिखाना शुरू किया। राजयोग के अभ्यास से मुझमें मानसिक परिपक्वता आई। जिंदगी में सबकुछ ठीक चल रहा था। कुछ दिन से डांस और एक्सरसाइज की क्लास लेने के बाद कुछ थकावट महसूस हो रही थी। डॉक्टर को दिखाया तो बोले- यूट्रस में गठान और पूरा खराब हो गया है। जल्दबाजी में बिना टेस्ट के ही डॉक्टर ने ऑपरेशन किया गया। इस दौरान मुझे बेहोश नहीं किया गया था, सिर्फ उस हिस्से को सुन्न किया गया। ऑपरेशन के दौरान डॉक्टर्स ने कहा कि गठान तो कैंसर की लग रही है। यह सुनकर मेरे हाथ-पांव फूल गए। क्योंकि कैंसर के चलते ही मैं अपनी मां को पहले ही खो चुकी थी। यह सुनते ही मेरी आंखों के सामने पूरी जिंदगी की पिक्चर घूमने लगी। फिर मैंने ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाए गए ज्ञान को उपयोग किया कि हमारे जीवन में परिस्थितियां और समस्याएं हमें मजबूत बनाने के लिए आती हैं। पूर्व जन्म के कर्मों का हिसाब-किताब के चलते शारीरिक बीमारी आती है। इसलिए जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे साक्षी भाव से उपराम होकर देखना चाहिए। साथ ही परमात्मा के वह महावाक्य याद आए कि 'बच्चे! तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूं'। इसके बाद मेरा मन शांत हो गया।

ऑपरेशन थियटर में परमात्मा का किया आह्वान

इस दौरान ऑपरेशन थियटर में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी डॉ. कृष्णा पहुंचीं। उन्होंने आकर मेरे सिर पर हाथ फेरा तो मेरा दर्द कुछ हद तक कम हो गया। मुझे ऐसा लगा कि परमात्मा ने कोई दूत भेजकर मेरा दर्द कम कर दिया। उन्होंने मेरा साहस भी बढ़ाया। फिर मैंने परमपिता परमात्मा जिन्हें हम प्यार से शिव बाबा कहते हैं, बाबा से कहा कि 'आप ही आओ और आकर ऑपरेशन करो'।

सैंपल के बाद 15 दिन बाद आना थी जांच रिपोर्ट

डॉक्टर्स ने गठान का सैंपल लेकर जांच के लिए भेज दिया। रिपोर्ट में आया कि मुझे कैंसर है। इस दौरान मुझे बीके शीतल दीदी ने मेरा मार्गदर्शन करते हुए कहा कि आप यह सोचो कि मुझे कोई बीमारी नहीं है। मैंने पूरे समय एक ही संकल्प किया कि मैं नार्मल हूं। साथ ही परिवार वालों का भी हौसला बढ़ाया, क्योंकि जैसे ही उन्हें पता चला कि मुझे कैंसर है तो सभी नर्वस हो गए थे। यहां तक कि मेरे पति की आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। मैंने खुद को संभालते हुए उन्हें समझाया कि आप चिंता मत करो, मैं जल्द ही कैंसर से जंग जीतकर दिखाऊंगी। रोज अमृतवेला योगाभ्यास करती थी कि पूरी तरह स्वस्थ हो गई हूं। इसके बाद मेरा अहमदाबाद का इलाज शुरू हो गया। जब पहली बार कीमो हुई तो आठ दिन तक दर्द रहा। इस पर शीतल दीदी ने कहा कि अगली बार जब कीमो कराने जाओ तो परमात्मा का आह्वान करना और महसूस करना कि मेरे सिर पर परमात्मा का हाथ है। इस अभ्यास से दूसरी बार कीमो कराने पर मुझे दर्द नहीं हुआ। साथ ही जल्दी होश भी आ गया। इलाज के दौरान मेरे सिर के बाल भी जा चुके थे। लेकिन मैंने कभी भी दर्द के बाद भी राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करना नहीं छोड़ा। तीन कीमो के बाद मुझे थम्बोसिस हो गया। इस कारण तीन कीमो और हुईं।

...और डॉक्टर ने एनेस्थीसिया देने से कर दिया मना

अहमदाबाद में छटवीं कीमो के बाद डॉक्टर ने कहा कि इस बार आपका ऑपरेशन करेंगे। लेकिन इधर मेरे परिवारवालों को किसी झाड़फूंक वाले ने बता दिया कि आप ऑपरेशन नहीं कराना नहीं तो मौत होना निश्चित है। यह सुनकर मेरी परिजन ऑपरेशन कराने के पक्ष में नहीं थे। लेकिन शीतल दीदी ने मेरा हौसला बढ़ाते हुए कहा कि आप तो ऑपरेशन कराओ और शिव बाबा उसे सफल भी करेंगे। 6 जनवरी 2021 को ऑपरेशन की तारीख भी तय हो गई, लेकिन 5 जनवरी को डॉक्टर ने एनेस्थीसिया देने से मना कर दिया। बोले- मरीज की हालत नाजुक है, हम रिस्क नहीं ले सकते हैं। इस दौरान डॉक्टर्स ने बताया कि मरीज के बचने की गुंजाइश एक फीसदी ही है। यह सब जानने के बाद भी मैं मेंटली रूप से स्ट्रांग रही। कभी बीमारी को खुद पर हावी नहीं होने दिया। साथ ही हमेशा मन में एक ही संकल्प चलता रहा कि मुझे जिंदगी की यह जंग खुशी-खुशी जीतनी है। हॉस्पिटल के डायरेक्टर द्वारा फोन करने के बाद ही डॉक्टर एनेस्थीसिया देने के लिए तैयार हुए। इस दौरान ऑपरेशन चल ही रहा था कि मुझे होश गया था तो डॉक्टर्स ने फिर से बेहोश किया। ऑपरेशन के दो घंटे बाद ही मुझे होश आ गया, यह देखकर डॉक्टर हैरान रह गए कि मरीज की एक फीसदी ही बचने की उम्मीद थी। ऑपरेशन सफल रहने के साथ होश भी इतने जल्दी आ गया। यह मरीज की इच्छाशक्ति का ही कमाल है।

सेवाकेंद्र के भाई-बहनों ने योग से दिए शुभ बाइव्रेशन

रक्षिता सोनी के सफल ऑपरेशन के लिए बीके भाई-बहनों ने लगातार 21 दिन तक सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शीतल दीदी के मार्गदर्शन में शुभ संकल्प दिए। भाई-बहन सुबह ब्रह्ममुहूर्त में रोजाना 15 मिनट परमात्मा से शक्ति लेकर मरीज के लिए देते थे। साथ ही इमेजीनेशन करते कि रक्षिता बहन पूरी तरह से ठीक हो गईं हैं। परमात्मा ने सर्जन बनकर उनका सफल ऑपरेशन कर दिया है। वह हम सबके बीच पहले की तरह खुशी-खुशी बातें कर रही हैं। इस तरह राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से उन्हें शुभ संकल्पों का दान दिया। इसके अलावा माउंट आबू के वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके सूरज भाई और बीके रुपेश भाई ने भी लगातार हौसला बढ़ाते हुए मन की शक्ति को पहचानने और उसे बीमारी में यूज करने के लिए मार्गदर्शन दिया। ***कैंसर से जंग जीतकर आज रक्षिता सोनी खुशहाल जिंदगी जी रही हैं।***

आध्यात्मिक ज्ञान विपरीत परिस्थितियों में बनता है ढाल

"आध्यात्मिक ज्ञान हमें विपरीत परिस्थितियों में ढाल के रूप में काम करता है। यही बात ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाई जाती है कि जीवन में कैसी भी समस्याएं शारीरिक-मानसिक, परिस्थितियां आएं इन्हें खेल समझकर पास करना है। परीक्षाएं जीवन में आगे बढ़ाने के लिए ही आती हैं। यदि हमारा मन सशक्त, शक्तिशाली है तो आधी समस्या तो वहीं खत्म हो जाती है। संकल्प शक्ति से सबकुछ संभव है। रक्षिता बहन बहुत ही नेक दिल, मिलनसार, सहयोगी और सरल स्वभाव की हैं। भाई-बहनों ने निःस्वार्थ भाव से उनके स्वस्थ होने के लिए योग से शुभ बाइव्रेशन दिए। आज उन्हें स्वस्थ देखकर बहुत खुशी होती है।"

● बीके शीतल दीदी, सेवाकेंद्र प्रभारी, रामगंज मंडी, कोटा

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

ज्ञान-पवित्रता का आधार स्तंभ थीं दादी गुलजार

परमात्मा तो जानी-जाननहार है। वह हम सबकी कुंडली जानते हैं कि मेरा कौन बच्चा सहयोगी, योगी और योग्य है। सृष्टि परिवर्तन के इस यज्ञ में जिस दिन 9 वर्ष की कन्या ने अपना पहला कदम बढ़ाया तो ब्रह्मा बाबा को यह आभास हो गया था कि यह बच्ची एक दिन परमात्म संदेशवाहक बनकर लाखों लोगों के जीवन को ज्ञान की गंगा में डुबकी लगवाने के निमित्त बनेगी। दिव्य बुद्धि के वरदान से सुशोभित दादी हृदयमोहिनी जी का व्यक्तित्व सागर की तरह गहरा और कृतित्व हिमालय की तरह विशाल था। वह ज्ञान की ऐसी शीतल धारा थीं, जिनके संपर्क में आकर हजारों लोगों के सोचने की दिशा बदल गई। भटके हुए को राह और डूबते हुए को किनारा मिल गया। उन्होंने अपने जीवन में त्याग-तपस्या से आध्यात्म की उस गहराई को पा लिया था जिसके समंदर में डूबने वाला गोताखोर ही अनुभूति कर सकता है। आध्यात्म की यात्रा में मौन-एकांत, आत्मा को अपने स्वरूप में स्थित होने, उसे महसूस करने और शक्तियों को जागृत कर उसे दिव्यता की ओर ले जाने के लिए पहली और अनिवार्य शर्त है। दादी मौन और एकांत की तो जैसे साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। बचपन से ही धीर-गंभीर स्वभाव और मनन-चिंतन तो उनके जीवन का हिस्सा रहा।

दादीजी हमेशा कहतीं थीं एक शब्द से काम चल जाए तो दो क्यों बोलें। उनके मुख से उच्चारित एक-एक शब्द ऐसे लगता था जैसे आसमान से मोतियों की बारिश हो रही हो। उन्होंने जीवन पर्यंत इस साधना को जारी रखा। परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में अक्षरतः ऐसे एकाकार कर लिया था, जैसे पानी में शकर घुलकर अपनी मिठास से पानी का स्वाद बदल देती है। वह परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन चरित्र में उतारकर एक-एक कर्म, दिव्यगुण और विशेषताओं का स्वरूप बन गईं। पवित्रता इतनी अखंड थी कि उनके संपर्क में आने वालों मानव मात्र को शक्तिशाली प्रकंपन महसूस होते थे। मुखमंडल ओज से ऐसा परिपूर्ण था जैसे सूर्य की तेजस्वी किरणें निकलकर चारों ओर फैल रही हों।

दादी ने आध्यात्म की उस गहराई को पा लिया था जिसके समंदर में डूबने वाला ही उसकी अनुभूति कर सकता है।

आप शक्ति स्वरूपा, दुर्गा हो...

दादी अपने प्रवचनों में बहनों से कहतीं थीं हमेशा बड़ा सोचो। आपमें वह शक्ति है जो चाहो कर सकती हो। जब मैं कर सकती हूं तो आप भी कर सकती हो। आप शक्तिस्वरूपा, दुर्गा और सरस्वती हो...अपने स्वरूप को इमर्ज कर कर्म करो। संसार आशा की निगाहों से तुम्हें देख रहा है। तुम्हें दुःखी, अशांत, दर्द में जी रहीं मनुष्य आत्माओं का कल्याण करना है। आध्यात्म पथ के राही साकार में दादी की एक झलक पाने के लिए ऐसे आतुर रहते थे, जैसे पपीहा पानी की एक बूंद के लिए प्यासा रहता है। पचास साल तक परमात्मा के संदेशवाहक के रूप में उन्होंने ज्ञानबल से लाखों लोगों के जीवन को 'गुलजार' कर जीने की नई राह दिखाई।

अब अव्यक्त वतन 'गुलजार'...

दादीजी को अंतिम विदाई देने मुंबई से आई डॉक्टरों की टीम ने अपना अनुभव बताया कि हमारे जीवन में दादी के रूप में पहला मरीज देखा जिसने कभी नहीं बताया कि मुझे क्या तकलीफ, दर्द है। वह दर्द से परे थीं। उनके कमरे में जाने पर जो दिव्य अनुभूति होती थी उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है, वह सिर्फ महसूस की जा सकती थी। दादी की इतनी उच्च मानसिक अवस्था उनके जीवनभर के त्याग-तप और साधना का ही परिणाम थी। दादी व्यक्त से महाप्रयाण कर अब अव्यक्त वतन 'गुलजार' करने की सेवा कर रही हैं।

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भाई-बहनों द्वारा किया गया, समाज के लिए कोई अनोखा पहल दिखाते हैं...

कोरोनाकाल में संगीत को बढ़ावा देने पर आरजे बीके रमेश का इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज

सर्टिफिकेट के साथ आरजे बीके रमेश व निदेशक बीके यशवंत।

■ शिव आमंत्रण ▮ आबूरोड ▮ ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो स्टेशन, रेडियो मधुबन 90.4 एफएम अपने 10 वर्ष पूरे कर रहा है। इस मौके पर रेडियो मधुबन के आरजे रमेश को कोरोना काल में संगीत को बढ़ावा देने पर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान मिला है। कोरोना काल में रेडियो मधुबन की टीम द्वारा लोगों तक सही जानकारी पहुँचाने और उन्हें किसी ना किसी तरीके से रचनात्मक गतिविधियों में जोड़े रखने का प्रयास किया गया। इस दौरान रेडियो मधुबन के कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता आरजे रमेश ने ऑनलाइन सिंगिंग कंपटीशन का आयोजन किया गया। इसमें देशभर से 409 प्रतिभागियों को ऑनलाइन जोड़ा गया। उनके इस प्रयास पर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से मेडल, प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

दिल्ली में रोहिणी सीएनजी स्टेशन के सामने की सड़क को मिला ब्रह्माकुमारीज़ मार्ग का नाम

बीके बहनों ने ब्रह्माकुमारीज़ मार्ग की शिला पट्टिका का किया लोकार्पण।

■ शिव आमंत्रण ▮ दिल्ली ▮ यह हर्ष का विषय है कि उत्तरी दिल्ली नगर निगम अभियांत्रिकी विभाग नरेला क्षेत्र द्वारा वार्ड नं 34-एन के क्षेत्रीय निगम पार्षद आनन्द सिंह आर्य की अध्यक्षता में सेक्टर 21 रोहिणी सीएनजी स्टेशन के सामने वाली रोड को 'ब्रह्माकुमारीज मार्ग' नाम दिया गया है। इसका उद्घाटन नरेला क्षेत्र के चेयरमैन जयेंद्र डबास, बीजेपी के नॉर्थ वेस्ट जिला अध्यक्ष देवेन्द्र सोलंकी, निगम पार्षद आनन्द सिंह आर्य, बीजेपी के दिल्ली प्रदेश प्रवक्ता मोहन लाल गेरा, करोल बाग स्थित पांडव भवन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा, रानी बाग एवम रोहिणी क्षेत्र प्रभारी बीके सरला एवं अन्य गणमान्य लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सभी का यही संकल्प रहा की ये मार्ग सर्व आत्माओं को शांति, प्रेम एवं खुशी का मार्ग प्रशस्त करेगा।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021 | Posted at Shantivan P.O. Dt. 17- 20 of Each Month

शख्सियत

ब्रह्माकुमारीज़ से मिली सीख, खुद को कभी फैक्ट्री का मालिक नहीं समझा

जयनाथ मौर्य,
निदेशक, केमिकल फैक्ट्री

15 साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए, सात साल से निरंतर दे रहे हैं सेवाएं

मौर्य बोले - फैक्ट्री में कर्मचारियों के साथ हमजोली बनकर काम करता हूं और करवाता हूं। उन्हें फील नहीं होने देता हूं कि मैं मालिक हूं। डांट-फटकार का नाटक जरूर करना पड़ता है।

- कैमिकल फैक्ट्री के निदेशक जयनाथ मौर्य बोले- कर्मचारियों को भाई कहकर करते हैं संबोधित, हमजोली बनकर करते हैं काम

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ▮ छपरौला, गौतमबुद्ध नगर उत्तर प्रदेश में कैमिकल फैक्ट्री के निदेशक जयनाथ मौर्य का जीवन राजयोग मेडिटेशन से कैसे बदला और क्या परिवर्तन आया, शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर किया। बता दें कि जयनाथ मौर्य पिछले 20 साल से इस कारोबार से जुड़े हैं। आइए, उन्हीं के शब्दों में जानते हैं जीवन परिवर्तनकारी अनुभव...

15 वर्ष पहले प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ना हुआ, लेकिन पिछले 7 साल से इस आध्यात्मिक ज्ञान मार्ग में निरंतर अपनी सेवाएं दे रहा हूं। इस ज्ञान में आने से पहले अनेक देवी-देवताओं का भक्त बनते हुए कन्फ्यूजन रहता था। मेरे मन में विचार उठता था कि सभी देहधारी देवी-देवता महापुरुष किसी न किसी पर निर्भर हैं। परंतु सत्य क्या है, जिसके जवाब में हमें परमात्मा शिवबाबा का उत्तर मिला और मैं भगवान शिव का बन गया।

हमें जब परमात्मा शिव बाबा का परिचय मिला उसके बाद भी मैं निरंतर उनका महावाक्य इसलिए नहीं सुन पा रहा था कि हमारे रहने की जगह से ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र करीब दस किलोमीटर था। इससे रोज वहां पहुंच पाना मुश्किल था, लेकिन हमारी फैक्ट्री के करीब सेवाकेंद्र है, यह मुझे पता ही नहीं था। एक दिन मुझे सपना आया कि भगवान मुझे सपने में कह रहे हैं कि बच्चे तुम रोज मुरली क्यों नहीं सुन रहे हो। अगले दिन मैंने मार्केट में एक सफेद वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहन को देखा, तो मन में आया यहां कोई सेवाकेंद्र नहीं है फिर भी बहन यहां कैसे पहुंची। लेकिन उनसे किसी कारण से बात नहीं कर सका। फिर पांच दिन बाद मुझे किसी ने बताया कि आप सफेद ड्रेस में रहते हो एक सफेद ड्रेस वाली बहन यहीं पास में ओम शांति सेंटर में रहती हैं। मैं उनको ढूंढते जब सेवा केंद्र पर पहुंचा तब वह नहीं मिलीं। फिर मैं अगले दिन उस सेवाकेंद्र की बहनों को खोजते हुए पहुंचा। इसके बाद मैं रोजाना मुरली सुनने लगा।

...और सेवाकेंद्र की जिम्मेदारी उठाई

तीन-चार दिन मुरली सुनने के बाद बहन ने बताया कि यहां की स्थिति ठीक नहीं है। मैं यहां छोड़कर कहीं और जाने वाली हूं। तब मैंने उनसे पूछ लिया यहां का खर्चा कैसे चलता है। तो उन्होंने नहीं बताया, लेकिन जब मैं रोज वहां जाने लगा तब मुझे वहां की आर्थिक स्थिति का आभास हो गया। इसके बाद मैंने संकल्प किया कि सेवाकेंद्र संचालन सहित सभी खर्च की जिम्मेदारी मैं उठाऊंगा।

परमात्मा की कृपा से बढ़ गया कारोबार

हमने परमात्म ज्ञान में सुन रखा था कि ज्ञानयज्ञ में अगर आप एक रुपया खर्च करेंगे, एक ईट मकान में लगाएंगे तो भगवान आपको इसके बदले पदम गुना देगा। इस बात पर मुझे पूरा यकीन था है और रहेगा। कुछ दिन बाद मैंने अपना नया मकान ब्रह्माकुमारी बहनों को सेवाकेंद्र चलाने के लिए भी सौंप दिया। क्योंकि हमारी इच्छा हमेशा रहती थी कि भगवान के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान के लिए कुछ ना कुछ जरूर करूंगा। कुछ समय बाद हमें टचिंग होने लगी कि संस्थान के लिए हमें रोड के बगल में जमीन लेना चाहिए। तब अपना विचार मैंने अपनी बहनों को बताया तो उन्होंने कहा विचार तो श्रेष्ठ है करना चाहिए आपको। वह जमीन करीब तीस लाख का होगा, लेकिन हमारे पास उस समय मात्र डेढ़ लाख रुपये थे। फिर भी भगवान ने तीस लाख का सौदा करवा दिया। यह कोई चमत्कार से कम नहीं था। हमारे लिए भगवान ने पर्वत से राई बना दिया। कहां डेढ़ लाख रुपये और करीब 70 लाख का काम करवा दिया। फिर 2 साल के अंदर करीब 80 लाख की जमीन ली। इस तरह से परमात्मा पर निश्चय रखने से हमने दो-ढाई साल के अंदर डेढ़ लाख रुपये से करीब ढाई-तीन करोड़ का काम परमात्म कृपा से किया।

फैक्ट्री में सभी कुमार भाई ही रखे

हम अपने ब्रह्माकुमारीज के सभी भाई-बहनों से गुजारिश करना चाहूंगा कि जितना आप अपने छोटे से परिवार के लिए कमाने का जद्दोजहद करते हैं उसका 10 परसेंट भी अगर भगवान के कार्य में आप लगाते हैं तो आपको उसका कई गुना रिटर्न मिलेगा। अपने केमिकल फैक्ट्री में जो भी स्टाफ रखता हूं सब कुमार भाई जिसके साथ पवित्रता के साथ भोजन बनाता हूं और सब मिलकर खाते है। इस ज्ञान में आने से पहले भी हमारा भोजन शाकाहारी ही हुआ करता था। लेकिन पिछले 7 साल से बिल्कुल सात्विक बिना प्याज लहसुन का भोजन कर रहा हूं।

बाबा की याद से ब्रह्मचर्य का पालन हो गया आसान, जीवन बन गया पवित्र

परमपिता परमात्मा शिव बाबा की शक्ति और आशीर्वाद से अब पवित्र और ब्रह्मचर्य का जीवन जीना हमारे लिए बहुत ही आसान हो गया है। इसके पीछे कारण यह है कि जैसे हमें कोई कहे कि मैं तुम्हें एक लाख रुपये दूंगा तुम पूरी रात बर्फ वाले पानी में खड़े रहो तो मैं खुशी-खुशी एक लाख के लोभ में ठंड में पूरी रात गुजार लूंगा। तकलीफ नहीं होगी उसी प्रकार भगवान ने कहा है कि तुम अगर ब्रह्मचर्य जीवन जीते हो तो मैं तुम्हें जन्नत का सुख दूंगा। इस लोभ ने हमें ब्रह्मचर्य जीवन को आसान कर दिया है।

कभी खुद को मालिक नहीं समझता

मेरी उम्र 45 साल है और आज भी रोजाना ठंडे जल से हाथ पांव धोकर बाबा की याद में सोता हूं तो कभी गंदे स्वप्न भी नहीं आते, यह मेरा अनुभव है। अपने कारोबार में मैं कई कुमारों के साथ हमजोली बनकर काम करता हूं और करवाता हूं। उन्हें फील नहीं होने देता हूं कि मैं मालिक हूं। जरूरत पड़ने पर डांट-फटकार का नाटक भी करना पड़ता है लेकिन गुस्सा करने की क्रोध करने की असल में जरूरत नहीं होती है। एक परिवार की तरह मैं अपने कारोबार को चलाता हूं।

बीके जयनाथ भाई के प्रयासों से आज छपरौला में ईश्वरीय सेवाएं दिनोंदिन उन्नति की ओर बढ़ रही हैं। संबोधित करतीं छपरौला गौतम बुद्धनगर सेवाकेंद्र प्रभारी (मध्य में) बीके भारती तथा अन्य बहनें।

संदेश- मेरे जीवन का अनुभव है कि हम भगवान के कार्य में एक रुपये लगाते हैं तो बदले में परमात्मा हमें पदमगुणा मदद करते हैं। इसलिए आप जो भी कमाते हैं उसका दस फीसदी हिस्सा जरूर परमात्मा के सेवा कार्य में लगाएं। इससे हमारा इस जन्म के साथ ही जन्मोंजन्म का भाग्य बनता है। यही जीवन की असली पूंजी है। बाकी सभी साधन तो यहीं रह जाएंगे। साथ जाएंगे तो हमारे पुण्य कार्य।

प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539